Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2 | साप्ताहिक क़ादियान | अंक 36

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

7 सितम्बर 2017 ई. 15 ज़िलहज्जा 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

करम दीन मुझे सज़ा दिलाने के लिए फौजदारी मुकदमा दायर करेगा और कई समर्थक उस की मदद करेंगे आख़िर वह स्वयं सज़ा पाएगा और ख़ुदा मुझे उस की बुराई से छुटकारा देगा अतः ऐसा ही प्रकट में आया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

24- चौबीसवां निशान- 30 जून 1899 ई में मुझे यह इल्हाम हुआ। पहले बेहोशी, फिर मूर्च्छा, फिर मौत, साथ ही उसके यह समझा कि यह इल्हाम एक ईमानदार दोस्त के बारे में है जिस की मौत से हमें दुःख पहुंचेगा। इसलिए अपनी जमाअत के कई लोगों को यह इल्हाम सुनाया गया और अल हकम 30 जून 1899 ई में लिख कर प्रकाशित किया गया फिर अंत जुलाई 1899 में हमारे एक निहायत ईमानदार दोस्त डॉ मुहम्मद बूड़े खां सहायक सर्जन एक आकस्मिक मौत से कसूर में गुज़र गए। पहले बेहोश रहे फिर अचानक मूर्छा छा गई। फिर अनश्वर दुनिया से कूच किया और उनकी मौत और इल्हाम में केवल बीस बाईस दिन का अंतर था।

25 -पच्चीवां निशान- करम दीन जेहलमी के उस मुकदमा फौजदारी के बारे में भविष्यवाणी है जो उसने जेहलम में मुझ पर दायर किया था जिसमें भविष्यवाणी के ये शब्द ख़ुदा तआला की तरफ से थे رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ और अन्य इलहाम भी थे जिन में बरी होने का वादा था। इसलिए ख़ुदा तआला ने इस मामले से मुझे बरी कर दिया।

26 -छब्बीसवां निशान- करम दीन जेलम के इस फौजदारी मुकदमा में मेरा बरी होना है जो गुरदासपुर में चन्दू लाल और आत्मा राम मजिस्ट्रेट की अदालत में मेरे पर दायर था और भविष्यवाणी में बतलाया गया था कि आख़िर बरी होगा तो मैं बरी हुआ।

27 -स्ताईसवां निशान करम दीन जेहलम की सज़ा के बारे में भविष्यवाणी है जिस के कारण वह सज़ा पा गया देखो मेरी किताब मवाहेबुर्रहान पृष्ठ 129 पंक्ति 8 यह तीनों पेशगोइयां बड़े विस्तार के साथ मवाहेबुर्रहमान में दर्ज हैं और यह पुस्तक मवाहेबुर्रहमान इस समय लिखकर प्रकाशित की गई थी, जबकि भविष्यवाणी का कोई अंजान मालूम न था भविष्यवाणी की पंक्तयां यह हैं जो किताब में प्रकाशित हुई।

ومن اٰیاتی ما انبأنی العلیم الحکیم فی امر رجل لئیم وبھتانه العظیم واوحی الیّ انه یرید ان یتخطف عرضك ثم یجعل نفسه غرضك وارانی فیه رؤیا ثلٰث مرات وارانی ان العدوّ اعد لذالك ثلا ثة حُماةٍ لتوھین و اعناتٍ ورئیت کأنّی احضرت محاکمة کالماخوذین ورئیت انّ اٰخر امری نجات بفضل ربّ العٰلمین ولو بعد حین و بُشّرتُ انّ البلاء یرد علٰی عدوی الکذاب المھین فاشعت کلّما رأیت والھمت قبل ظھوره فی جریدةٍ یسمّی الحکم وفی جریدة اخری یُسمّی البدر ثم قعدت کالمنتظرین وما مرّ علٰی مارئیت الّا سنة فاذا ظھر قدر اللّٰه علٰی ید عدوّ مبین اسمه کرم الدین وقد ظھر بعض انبآءه تعالٰی من اجزآءٍ ھٰذه القضیة فیظھر بقیتھا کما وعد من غیر الشّكّ والشبھة

अनुवाद: और मेरे निशानों में से एक यह है कि जो अलीम और हकीम ख़ुदा ने एक लईम (बुरा भला कहने वाले) व्यक्ति के बारे में और उसके बड़े आरोप के बारे में मुझे ख़बर दी। और मुझे अपनी वह्यी से सूचना दी कि यह व्यक्ति मेरी इज़्ज़त दूर करने के लिए हमला करेगा और अंततः मेरा निशान आप बन जाएगा और ख़ुदा ने तीन सपनों में यह तथ्य मेरे पर प्रकट किए और सपने में मेरे पर जताया कि यह दुश्मन तीन समर्थन करने वाले अपनी सफलता के लिए निर्धारित करेगा ताकि किसी तरह अपमान करे और दुःख पहुँचाए और मुझे सपने में दिखाया गया कि मानो मैं किसी अदालत में गिरफ़्तारों की तरह हाज़िर किया गया हूँ और मुझे दिखलाया गया कि अंत में इन स्थितियों का मेरी मुक्ति है यद्यपि कुछ अवधि के बाद हो। और मुझे बिशारत दी गई कि आरोप लगाने वाले दुश्मन कज़्ज़ाब पर बला लौटाई जाएगी अतः इन सभी ख़वाबों और इलहामों को मैंने समय से पहले प्रकाशित कर दिया और जिन अख़बारों में प्रकाशित किया उन में से एक का नाम अल हकम है और दूसरे का नाम अलबदर। फिर मैं इंतज़ार करता रहा कि कब यह भविष्यवाणी की बातें प्रकट में आएंगी तो जब एक वर्ष बीता तो यह भाग्य की बातें करम दीन को हाथ से प्रकट में आ गई (अर्थात उसने अकारण मेरे पर फौजदारी मुकदमा दायर किया।) अतः इसके मुकदमा दायर करने से भविष्यवाणी का एक हिस्सा तो पूरा हो गया और जो बाकी हिस्सा है अर्थात मेरा उस के मुकदमा से निजात पाना। और अंत में उसी का सज़ा पाना यह भी जल्द ही पूरा हो जाएगा। पंक्ति के इस भाग से पता चलता है कि इस पुस्तक के प्रकाशन के समय तक न मुझे करम दीन के मुकदमा से मुक्ति और रिहाई मिली थी और न उसे सज़ा हुई थी लेकिन यह सब कुछ भविष्यवाणी के तौर लिखा गया था। यह अनुवाद है इस भविष्यवाणी की जो अरबी में ऊपर लिखी गई है जिसमें बतलाया गया है कि करम दीन मुझे सज़ा दिलाने के लिए फौजदारी मुकदमा दायर करेगा और कई समर्थक उस की मदद देंगे आख़िर वह स्वयं सज़ा पाएगा और ख़ुदा मुझे उस की बुराई से छुटकारा देगा अतः ऐसा ही प्रकट में आया। अब सोचना चाहिए कि यह भविष्यवाणी कितनी भविष्य की ख़बरों पर आधारित है क्या किसी व्यक्ति या शैतान का काम है कि ऐसी भविष्यवाणी करे जो मेरी इज्ज़त और दुश्मन के अपमान का आदेश देती है।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 223-226)

123 वां

जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अः, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अल्लाह तआला की राह में खर्च करना

(पवित्र उपदेश और ईमान वर्धक घटनाएं) (भाग-1)

अल्लाह तआला ने इंसान को इस दुनिया में इस उद्देश्य से पैदा किया है कि वह एक बन्दा के रूप में जीवन बिताते हुए अल्लाह तआला के सानिध्य की सब राहों का पालन करता रहे ताकि जब इस कर्मक्षेत्र से फल घर की तरफ जाए तो अपने जावन के उद्देश्य में सफल घोषित हो और अल्लाह तआला की चिरस्थायी के शाश्वत जन्नत में दाख़िल हो सके। इस महान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला ने जो माध्यम और संसाधन प्रदान किए हैं उनमें से एक महत्त्वपूर्ण माध्यम अल्लाह तआला की राह में खर्च करना अर्थात अल्लाह तआला के रास्ते में, उस की ख़ुशी पाने की शुद्ध विवेक से खर्च करना है। इस लेख में, इसी विषय में पर इस लेख में कुछ बातों का अनुरोध करता हूं।

कुरआन की आयतें:

अल्लाह तआला ने मोमिनों की हिदायत और मार्गदर्शन के लिए कुरआन मजीद की सूरत में जो पूर्ण शरीयत उतारी और जिसे हुदन लिन्नास भी फरमाया और विशेषकर हुदन लिल मुत्तकीन भी। इस में, प्रत्येक विषय को बहुत स्पष्ट रूप से वर्णन कर दिया गया है जिस की आदमी को उसके उद्देश्य को प्राप्त करने की आवश्यकता हो सकती है। इन लेखों में से एक मुख्य विषय अल्लाह तआला की राह में अपने धन को खर्च करने से सम्बन्धित रखता है। जिस तरह ताकीद और विवरण से यह विषय कुरआन में वर्णित किया गया है इससे अल्लाह तआला की राह में खर्च करने का महत्त्व भी स्पष्ट होता है और इससे यह भी पता चलता है कि इस मार्ग को अपनाते हुए, मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो सकता है।

कुरआन मजीद का अध्ययन शुरू करते ही यह आयतें हमारा ध्यान खींचती हैं जो सूरे अलबक़रा: की शुरुआत में आई हैं। फरमाया:

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ

(सूरह अल्बकर: 3)

कि कुरआन वह एक महान मौऊद किताब है जिस में कण मात्र भी संदेह नहीं और यह मुत्तकियों के लिए हिदायत है। यहाँ यह सवाल दिलों में उभरते हैं कि आख़िर ये मुत्की लोग कौन हैं और आदमी मुत्की कैसे बन सकता है। इन दो सवालों के जवाब यह प्रदान फरमाया

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ

(सूरह अल्बकर: 4) कि मुत्तकी वे लोग हैं जो अदृश्य पर ईमान लाते हैं, और नमाज़ की स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम उन्हें देते हैं उस में से खर्च करते हैं।

इस में, मुत्तकी लोगों की जो आख़रि कार सफल होने वाले हैं दो बुनियादी चिन्ह वर्णन किए गए हैं। इन संकेतों से उन्हें ख़ूब पहचाना जा सकता है और यही वह दो माध्यम भी हैं जिनसे तक्वा की राहों पर कदम मारते हुए व्यक्ति अन्त अपनी ज़िन्दगी के मकसद को पाने में सफल हो जाता है और अल्लाह तआला का प्रेम और निकटता पा लेता है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने तक्वा की तलाश करने वाले और तक्वा की अंतहीन राहों के साधक की एक निशानी यह बताई है कि उस के जीवन का एक एक पल ऐसे व्यतीत होता है कि उस पर फना होने का विषय पूरा हो रहा हो वह इस तथ्य को ख़ूब अच्छी तरह जानता है कि उस ने जो कुछ पाया वह केवल अल्लाह तआला की कृपा से ही पाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बिन्दु को कितने खूबसूरत अंदाज़ में वर्णन फरमाया है?

सब कुछ तेरी अता है, घर से तो कुछ न लाए

इस आस्था पर पूरी तरह स्थापित हो जाने के बाद एक मोमिन बन्दा का सारी जीवन इस तरह से गुज़रता है कि वह अपनी हर चीज़ को इलाही विश्वास करते हुए पूरी प्रसन्नता और दिल की गहराई के साथ, और विश्वास के साथ, राहे ख़ुदा में खर्च करता है और खर्च करता चला जाता है। अपनी जान, माल, समय, सम्मान और अपनी खुदा द्वारा प्रदत्त शक्ति और क्षमता का एक कण इस मार्ग में कुरबान कर देने के बाद, उसके दिल की गहराइयों से यही आवाज़ उठती है कि

जान दी दी हुई उसी की थी
हक तो यह है कि हक अदा न हुआ

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बहुत दिलचस्प तरीके से इस विषय का उल्लेख आरिफाना रंग में किया है:

ख़ुदा से वही लोग करते हैं प्यार
जो सब कुछ ही करते हैं उस पर निसार
इसी फिक्र में रहतें हैं वे रोज़ो शब
कि राज़ी वह दिलदार होती है कब
इसे दे चुके मालो जां बार बार
अभी ख़ौफ दिल में कि हैं नाबकर

धार्मिक ज़रूरतों के लिए राहे ख़ुदा में अपने मालों को खर्च करने का वर्णन कुरआन में बहुत बार उल्लेख हुआ है अल्लाह तआला ने बार बार इस की ताकीद फरमाई है और यह वादा दिया कि ग़ैब जानने वाला ख़ुदा तुम्हारी हर कुरबानी को ख़ूब देखने और जानने वाला है और वह वह्हाब ख़ुदा हो जो इस नेकी का बदला गिन गिन कर नहीं बल्कि बे-हिसाब देता है और जिसके लिए चाहता है अपने बदला को असंख्य रंग में बढ़ाता चला जाता है।

अल्लाह तआला की राह में खर्च करना जिहाद करार देते हुए व्यापार के रंग में उल्लेख किया है। उन्होंने कहा:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ط ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ط ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ط وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

(सूरत अल फ़ितर 11-14)

"हे लोग जो ईमान लाए हो ! क्या तुम्हें एक व्यापार के बारे में सूचित न करूं जो तुम्हें एक दर्दनाक सज़ा से बचाएगी? तुम (जो) अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाते हो और अल्लाह तआला के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करते हो, यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है अगर तुम ज्ञान रखते हो। वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसी जन्नतों में प्रवेश कर देगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं और ऐसे शुद्ध घरों में भी जो हमेशा रहने वाली जन्नतों में हैं यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। एक अन्य (अच्छी ख़बर भी) जिसे तुम चाहते हो अल्लाह की तरफ से नुसरत और करीब की जीत है। अत: तू मोमिनों को सुसमाचार दे दे।

इन आयतों में अल्लाह तआला की राह में खर्च करने के लिए बरकतों का बड़ी समग्रता के साथ उल्लेख किया है। दुनिया में मिलने वाले पुरस्कार, ख़ुदाई नुसरत और जीत का भी ज़िक्र है और आख़िरत में दर्दनाक पीड़ा से मुक्ति, गुनाहों की क्षमा और अल्लाह तआला की ख़ुशी, अनन्त जन्नतों में प्रवेश पाने की ख़ुशी सुनाई है ज़ाहिर है कि वित्तीय बलिदान के माध्यम से अल्लाह तआला के ये सब फज़ल इस अल्लाह तआला की राह में खर्च करने वाले को मिलते हैं और उसकी झोलियाँ दुनिया और आख़रित में उन नेअमतों से भरपूर रहती हैं।

इसी विषय का ज़िक्र एक दूसरी आयत में भी है जिस में फरमाया:

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ

(सूरह अत्तौब: 112) " बेशक अल्लाह तआला ने मोमिनों से उनकी जानें और उनके माल ख़रीद लिए हैं ताकि उस के बदला में उन्हें जन्नत मिले ।

जिस व्यक्ति को सच्चे ख़ुदा की तरफ से जीते जी जन्नत की बिशारत मिल जाए वह बेशक अपनी मंजिल को पा गया। इसी आयत के अंतिम भाग में अल्लाह तआला ने वित्तीय कुरबानी करने वाले मुजाहेदीन को कितने स्पष्ट शब्दों में बिशारत दी है कि अपने खून पसीने से कमाए हुए हलाल रिज़क को मेरी ख़ुशी के लिए कुरबानी करने वालो! मैं तुम्हें कहता हूँ:

فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

(सूर: अत्तौबह: 112) " कि तुम अपने इस सौदे से ख़ुश हो जाओ जो तुम ने अपने साथ किया है और यही बहुत बड़ी सफलता है " (शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री) ☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला का बड़ा फज़्ल और आशीर्वाद हैं कि पिछले सप्ताह जमाअत अहमिदया बर्तानिया का जलसा सालाना ख़ैरियत से आयोजित हुआ। जलसा सालाना के तीन दिनों में, हमने अल्लाह तआला की कृपा और बरकतों के दृश्य देखे। कुछ परिस्थितियों और मौसम की वजह से कुछ चिंता भी थी लेकिन अल्लाह तआला ने केवल अपनी कृपा से मौसम के बुरे प्रभाव से सुरक्षित रखा और हर शामिल होने वाले ने देखा कि अल्लाह तआला की नुसरत और फज़्ल प्रत्येक अवस्था में नाज़िल हो रहे थे। अतः इस बात पर हम अल्लाह तआला का जितना भी धन्यवाद करें कम है और वास्तविक शुक्र तब ही अदा हो सकता है जब हम अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए हर समय प्रयासरत रहें। यह धन्यवाद कार्यकर्ताओं के द्वारा भी होना चाहिए ताकि इससे जहां हम अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने वाले हों वहाँ इस धन्यवाद के कारण अपनी क्षमताओं में सुधार पैदा करने वाले भी हों। इसी प्रकार, शामिल होने वालों को भी आभारी होना चाहिए ताकि वे भी अल्लाह तआला के फजलों के ज़ज्ब करने बाले बनें और उनके जीवन में अधिक से अधिक पवित्र परिवर्तन पैदा होते चले जाएं। इसी प्रकार जो लोग सेवा कर रहे थे उन का भी लोगों को आभारी होना चाहिए, जो शामिल हुए। इसी तरह काम करने वालों को अल्लाह, जैसा कि मैंने कहा, हर लिहाज से आभारी होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों या धर्म के लिए आने वाले मेहमानों, धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आने वाले मेहमानों की सेवा करने का अवसर प्रदान फरमाया।

जलसा सालाना के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य तो यह भी है कि ऐसा भाईचारा शुक्र की भावनाएं एक-दूसरे के लिए पैदा हों जो आदर्श हों। अल्लाह तआला की यही मुहब्बत और भाईचारा की भावनाएं हैं जिन की अभिव्यक्ति जब हम अपनों और दूसरों से कर रहे होते हैं तो ये चीज़ प्रत्येक आने वाले मेहमान को प्रभावित कर रही होती है। बौद्धिक और धार्मिक कार्यक्रमों के अलावा हर अहमदी का व्यावहारिक नमूना आने वाले ग़ैरों को बेहद प्रभावित कर रहा होता है जिस को वे व्यक्त करते हैं कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का नमूना हमें जलसा में नज़र आया जिस में हम बड़े प्रभावित हुए।

विभिन्न देशों से जलसा सालाना में शामिल होने वाले मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम मेहमानों की प्रतिक्रियाएं और अभिव्यक्तियां

जलसा सालाना में शामिल होने वाले नए अहमदियों के ईमान वर्धक बयान

आलमी (वैश्विक) बैअत के आयोजन का असामान्य प्रभाव

वैश्विक प्रेस में जलसा की कवरेज विभिन्न देशों के पत्रकारों के विचार

बहरहाल जलसा के माहौल और ड्योटी देने वालों का एक प्रभाव है जो हर तरह के न्याय करने वालों को प्रभावित करता है। अल्लाह तआला सभी ड्योटी देने वालों को और शामिल होने वालों को भी बदला दे जो इस्लाम के इस ख़ामोश व्यवहारिक तब्लीग़ का हिस्सा बनते हैं। हमें विशेषकर उन हज़ारों सेवा करने वाले लड़कों और लड़कियों, पुरुषों और महिलाओं को अपनी दुआओं में याद रखना चाहिए।

प्रेस और मीडिया में व्यापक रूप से जलसा की कवरेज, ऑनलाइन मीडिया, टीवी, रेडियो, समाचार पत्र, सोशल मीडिया, एम.टी.ए लाइव स्ट्रीमिंग, अफ्रीका आदि के विभिन्न देशों के टीवी चैनलों के द्वारा करोड़ों लोगों तक सन्देश पहुंचा। कुछ देशों में, टीवी चैनलों ने पूरी कार्रवाई प्रसारित की।यह अल्लाह तआला का फज़्ल है हमारी कोशिशें बहुत छोटी हैं।

पिछले साल की तरह, इस वर्ष भी लगभग 300 ख़ुद्दाम एक चार्टर्ड विमान द्वारा कनाडा से आए थे और जलसा के बाद वकारे अमल कर के वायनड अप के काम में हिस्सा लिया

आदरणीया साहिबज़ादी ज़किया बेगम साहिबा पत्नी आदरणीय साहिबज़ादा कर्नल मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहिब और आदरणीय तारिक मसूद साहिब (मुरब्बी सिलिसला) पुत्र मसूद अहमद ताहिर। और आदरणीया शकील अहमद मुनीर साहिब पूर्व अमीर और मिशनरी इन्चार्ज ऑस्ट्रेलिया की वफात। मरहूमीन का उल्लेख और नमाज़ जनाज़ा गायब ।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 4 अगस्त 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला के बड़ा फज़्ल और आशीर्वाद हैं कि पिछले सप्ताह जमाअत अहमिदया बर्तानिया का जलसा सालाना ख़ैरियत से आयोजित हुआ। जलसा वर्ष के तीन दिनों में, हमने अल्लाह तआला की कृपा और बरकतों के दृश्य देखे। कुछ परिस्थितियों और मौसम की वजह से कुछ चिंता भी थी लेकिन अल्लाह तआला ने केवल अपनी कृपा से मौसम के बुरे प्रभाव से सुरक्षित रखा और हर शामिल होने वाले ने देखा कि अल्लाह तआला की नुसरत और फज़्ल प्रत्येक अवस्था में नाज़िल हो रहे थे। अतः इस बात पर हम अल्लाह तआला का जितना भी धन्यवाद करें कम है और वास्तविक शुक्र तब ही अदा हो सकता है जब हम अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए हर समय प्रयासरत रहें। यह धन्यवाद कार्यकर्ताओं के द्वारा भी होना चाहिए ताकि इससे जहां हम अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने वाले हों वहाँ इस धन्यवाद के कारण अपनी क्षमताओं में सुधार पैदा करने वाले भी हों। इसी प्रकार, शामिल होने वालों को भी आभारी होना चाहिए ताकि वे भी अल्लाह तआला के फजलों के ज़ज्ब करने बाले बनें और उनके जीवन में अधिक से अधिक पवित्र परिवर्तन पैदा होते चले जाएं। इसी प्रकार जो लोग सेवा कर रहे थे उन का भी लोगों को आभारी होना चाहिए, जो शामिल हुए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जो लोगों का या ख़ुदा तआला के बन्दों का शुक्रिया नहीं करता वह अल्लाह तआला का भी धन्यवाद नहीं करता।

(सुनन अत्तिरमज़ी हदीस 1954)

अत: इस लिहाज़ से सबसे शामिल होने वालों को काम करने वालों का भी शुक्रिया अदा करना चाहिए।

इसी तरह काम करने वालों को अल्लाह, जैसा कि मैंने कहा, हर लिहाज से आभारी होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों या धर्म के लिए आने वाले मेहमानों, धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आने वाले मेहमानों की सेवा करने का अवसर प्रदान फरमाया।

वास्तव में, जलसा सालाना के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य तो यह भी है कि ऐसा भाईचारा शुक्र की भावनाएं एक-दूसरे के लिए पैदा हों जो आदर्श हों। अल्लाह तआला की यही मुहब्बत और भाईचारा की भावनाएं हैं जिन की अभिव्यक्ति जब हम अपनों और दूसरों से कर रहे होते हैं तो ये चीज़ प्रत्येक आने वाले मेहमान को प्रभावित कर रही होती है। बौद्धिक और धार्मिक कार्यक्रमों के अलावा हर अहमदी का व्यावहारिक नमूना आने वाले ग़ैरों को बेहद प्रभावित कर रहा होता है जिस को वे व्यक्त करते हैं कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का नमूना हमें जलसा में नज़र आया जिस में हम बड़े प्रभावित हुए। युवा बच्चों से लेकर वृद्ध तक सभी लोग अपने स्वयं के सर्कल में असाधारण ईमानदारी के साथ काम कर रहे थे। इसी तरह, शामिल होने वाले भी बिना किसी बेचैनी और बुराई के फैलने से जलसा में खामोशी से शामिल हो रहे थे। और कार्यक्रमों से लाभ उठा रहे थे और इस व्यावहारिक नमुने की अभिव्यक्ति एक दुनिया के इंसान के लिए हैरत में डालने वाली बात है। आने वाले ग़ैर-मेहमान भी अपने विचार को व्यक्त करते रहे हैं। इस समय में कुछ अभिव्यक्तियां प्रस्तुत करूँगा जो उन्होंने इस माहौल को देखकर वर्णन कीं और स्पष्ट शब्दों में इस बात का इज़हार किया कि अगर यह इस्लाम की शिक्षा है तो इस शिक्षा के फैलने की दुनिया में ज़रूरत है।

पूर्व विदेश मंत्री और सलाहकार, राष्ट्रपति बेनिन, मरयम बोनी जियालो सहिबा हैं इस समय वरिष्ठ मंत्री की वरिष्ठ सलाहकार भी हैं। कहती हैं कि इस घटना के माध्यम से मुझे जमाअत अहमिदया को गहराई से समझने का अवसर मिला। मैं जलसा की व्यवस्था से बहुत प्रभावित हूं। श्रमिकों का मानक बहुत अधिक था। मुझे कार्यकर्ताओं की ईमानदारी देख कर हैरान रह गई। कहती हैं मैंने प्रशासनिक रूप में हर तरह से समीक्षा की (बड़ी समीक्षात्मक नज़र से लोग देखते हैं) लेकिन इतने बड़े जलसे में कोई त्रुटि नज़र नहीं आई। हर विभाग को समीक्षात्मक रूप से देखा, लेकिन हर विभाग में व्यवस्था के मानक उच्च थे फिर कहते हैं कि जब मैं कार्यकर्ताओं की तरफ देखती तो महसूस करती कि क्या छोटे और क्या बड़ा, बूढ़े, युवा, पुरुष, महिला अत: हर वर्ग के लोग दूसरों को आराम पहुंचाने के लिए प्रयासरत थे। हर कोई अपने आराम भुला कर दूसरों के आराम और सुविधा के लिए तैयार था।इन मुस्कुराते चेहरों को मैं अपने जीवन में कभी भुला नहीं पाऊंगी जो अन्य मेहमानों की सेवा करने में ख़ुशी अनुभव करते हैं। ये सुन्दर यादें मेरे जीवन का हिस्सा हैं मेरी इच्छा है कि ये मूल्य हमारे देश में भी स्थापित हों। और जमाअत अहमदिया एक सीखने की अकाडमी है जिस में हर देश के युवा लोगों को शिक्षा मिलती है।

कहती हैं कि यदि मैं आध्यात्मिक रूप से देखो, तो हर तरफ एक एक भाईचारे का परिवेश था, जिससे आध्यात्मिकता में वृद्धि होती है। यह ऐसा परिवेश था जिसे मैंने अपने जीवन में पहली बार अनुभव किया और जो नए आने वाले मेहमान थे उन्होंने पहली बार ऐसा माहौल देखा था। कहती है कि इस्लाम जो अहमदियत प्रस्तुत करती है वही दुनिया को शांति देता है और दुनिया की समस्याओं का समाधान इसी में है।

फिर कहती हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया का महिलाओं को जो भाषण था, उस ने सोच पर गहरी छाप छोड़ी है। बाकी मुस्लिम समूहों के निकट एक महिला की स्थिति गुलाम से कहीं ज्यादा नहीं है। लेकिन इमाम जमाअत अहमदिया ने महिलाओं के संबोधन में महिलाओं को उस्तानी करार दिया है और उसके कर्तव्यों में आने वाली नस्लों का प्रशिक्षण और शिक्षा को शामिल किया है, जो दुनिया का भविष्य है। अर्थात दुनिया का भविष्य महिलाओं के हाथों में है और महिलाओं के हाथों में भी धर्म का भविष्य है। कहती हैं कि यह बहुत बड़ा सम्मान है जो महिलाओं को दिया गया है और इसी से एक स्वस्थ और शांतिपूर्ण समाज की स्थापना हो सकती है। "

फिर ग्वाटेमाला के राष्ट्रीय संसद के मेम्बर इलिएना कॉल्स (Iliena Calles) ने अपनी धारणा को व्यक्त किया कि जलसा में शामिल होना के एक बहुत ही अजीब और आश्चर्यजनक अनुभव था। इस्लाम धर्म और जमाअत अहमदिया के बारे में मेरे विचार में एक बहुत बड़ा बदलाव पैदा हुआ है। मीडिया ने इस्लाम की एक बहुत ही ग़लत और भयानक अवधारणा बनाई है कि इस्लाम हिंसा और नफरत का शिक्षा देता है। लेकिन हमें इस जलसा में इस्लाम की वास्तविक शांतिपूर्ण शिक्षा की व्यावहारिक तस्वीर देखने का मौका मिला और जमाअत अहमदिया का जो माटो है कि "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं" यही एक तरीका है जिससे विश्व शांति, आपसी प्यार और न्याय दुनिया में स्थापित किया जा सकता है कहती हैं कि हज़ारों मेहमानों की सेवा जो कार्यकर्ता कर रहे थे। एक अदभुत नज़ारा था। फिर महिलाओं के भाषण का भी इस ने उल्लेख किया कि किस तरह स्त्री का सम्मान है और कैसे भाषण में महिला के, मां के पैरों के नीचे जन्नत का ज़िक्र हुआ। फिर कहती हैं, मैंने पुरुषों की मार्की की तुलना में, महिलाओं के जलसा गाह और मार्की में अधिक आराम, सुविधा और स्वतंत्रता महसूस की। यह इस्लाम की सुंदर और प्यारी शिक्षा का अच्छा उदाहरण है कि महिलाओं का सम्मान, संरक्षण और पूर्ण स्वतंत्रता की गारंटी दी जाती है। यह कहा जाता है कि अब मैं इस्लाम की शांति वाली और सुंदर शिक्षा की अवधारणा के साथ वापस जा रही हूं।"

इसी तरह, कोस्टा रिका के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सर्जियो मोया (Sergio Moya) जलसा में शामिल हुए। कहत हैं कि "मैंने इस जलसा के माध्यम से इस्लाम की एक नई तस्वीर देखी है। मुसलमानों की एक ऐसी जमाअत देखी जो पारस्परिक प्रेम और मुहब्बत में बेजोड़ है। जो अपने ईमान की एक व्यावहारिक तस्वीर प्रस्तुत करती है मैं वापस जाकर अपने मित्रों के क्षेत्र और छात्रों को बताऊंगा कि जमाअत अहमदिया इस्लाम की वास्तविक और सुंदर शिक्षाओं को व्यावहारिक तौर पर पेश करती है और जो वास्तव में अपने माटोका पालन करती। " और यह आने वाले लोग हमारी तब्लीग़ का भी माध्यम बन जाते हैं।

फिर कोस्टा रिका की सांसद सलाहकार डगलस मोंटी रूसो (Doglas Monteroso) साहिब कहते हैं कि " मैंने जलसा सालाना में इमाम जमाअत अहमदिया के भाषण बड़े विचार और ध्यान से सुने। उनकी इस नसीहत मुझे बहुत प्रभावित किया कि अपने दुश्मनों को माफ करने और उनके लिए दुआ करने से दिल वैर और द्वेष से मुक्त हो जाता है। " (और वह शिक्षा है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें दी।) कहते हैं कि " और यही बात है जो दुनिया में शांति की स्थापना का माध्यम हो सकती है और इन भाषणों से मुझे आध्यात्मिक और व्यावहारिक तौर पर बहुत लाभ पहुंचा है और इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं और उनकी व्यावहारिक तस्वीर इस जलसा में देखने को मिली । "

हैती (Haiti) के राष्ट्रपति के प्रतिनिधि जोसेफ पियारे (Joseph Pierre) कहते हैं कि " जलसा में शामिल होने से पहले मेरे दिल में कई विचार थे कि पता नहीं किस प्रकार के मुसलमान हैं और वहाँ जाकर मेरा क्या बनेगा? लेकिन जलसा में शामिल होने के बाद, मेरे सभी संदेह दूर हो गए हैं। प्रत्येक सादगी और आचरण का प्रदर्शन कर रहा था। हर तरफ भाईचारे का माहौल था। " फिर कहते हैं, " मैं कोई धार्मिक आदमी नहीं हूँ लेकिन इस जलसा में शामिल होने और इमाम जमाअत अहमदिया के साथ मिलने के बाद मेरा दिल कह रहा है कि अगर कोई सच्चा धर्म है तो वह इस्लाम और अहमदियत है "

फिर बुर्किना फासो में एक मानवाधिकार आयोग के सदर ज़ूको मौरे (Zoucomore) साहिब हैं, वह भी जलसा में शामिल हुए थे। वे कहते हैं कि " जब मुझे जलसा सालाना में शामिल होने की दावत दी गई तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि मैं न तो जमाअत का सदस्य हूँ न ही मुसलमान हूँ लेकिन फिर भी मुझे मुसलमानों की एक जलसा में आमंत्रित किया जा रहा है। जलसा में शामिल होने के बाद, मैंने देखा कि जमाअत तो बिना किसी भेदभाव के सभी से प्यार और एक दूसरे से मुहब्बत करने के लिए अपनी प्रेम के बाहें फैलाए हुए है। और प्रत्येक से प्यार तथा मुहब्बत सा व्यवहार करती है सब को एक ही तरह से इज़्ज़त और सम्मान देता है और हर किसी का ख्याल रखती है। कहते हैं कि "मैंने कई धार्मिक नेताओं की तकरीरें सुनी हैं जब वे बात करते हैं,तो इस प्रकार के मानो वे ही सच्चाई पर हैं और वे लोगों की भावनाओं के साथ खेलते हैं। लेकिन मैंने इमाम जमाअत अहमदिया के भाषण ध्यान से सुने और सारी तकरीरों का केन्द्रीय बिन्दु यही था कि दुनिया में शांति की स्थापना हो।" और यह शिक्षा है, जिस के कारण से दुनिया में शांति स्थापित हो सकती है और हम आतंकवाद और अन्याय को हरा सकते हैं।"

इसी तरह, क्रोएशियाई प्रतिनिधिमंडल में एक महिला कैटरीना सालिक (Katrina Celjak) साहिबा भी शामिल थीं कहती हैं कि " मैं पहलो चर्च में नन (Nun) थी। (अब सच्चाई की तलाश में हैं।) आगे कहती हैं "जलसा के परिवेश ने और यहां पर लगाई गई प्रदर्शनियों और जमाअत के बारे में अन्य जानकारी

ने मेरे मन को बहुत नवीनता प्रदान की है मुझे लगता है कि शायद जल्द ही सच्चाई की तलाश का सफर अपनी मंजिल को पा लेगा। " कहती हैं कि " इमाम जमाअत अहमदिया के भाषणों ने मेरे मन पर बड़ा गहरा प्रभाव छोड़ा है। अब मैंने सभी मामलों का बहुत गहराई से समीक्षा करनी शुरू कर दी है।

क्रोएशिया के प्रतिनिधिमंडल में इंटरनेशनल बिजनेस मैनेजमेंट के एक छात्र शामिल थे। वह कहते हैं कि " जलसा की व्यवस्था, प्रेम और ईमानदारी से हम बहुत प्रभावित हुए। वह कहते हैं कि " जलसा के दौरान छोटे बच्चे जिस प्रेम और ईमानदारी के साथ पानी पिलाने की ड्यूटी कर रहे थे या ख़राब मौसम में पार्किंग और यातायात को नियंत्रित किया जा रहा था और सफाई की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए जो कोशिशें की जा रही थीं इन सभी मामलों ने उन पर बहुत गहरी छाप छोड़ी है। " और कहते हैं कि " वह पहली बार अहमदिया जलसा में शामिल हुए हैं लेकिन इस की यादगारें वह सारी उम्र याद रखेंगे। " (उनसे वहाँ जमाअत को स्थायी संपर्क रखना चाहिए)

पिछले साल, क्रोएशिया से एक जोड़ा आया था। बड़ी उमर् के हैं मुसलमान थे और वे इस साल भी शामिल हुए और फिर उन्होंने मुझे मुलाकात में कहा कि " पिछले साल हम एक आम मुसलमान के रूप में शामिल हुए थे और इस साल हम अहमदी मुसलमान के तौर पर जलसा में शामिल हुए हैं। " तो जलसा अल्लाह तआला का बड़ा फज़ल होता बैअतें भी होती हैं।

फिलीपींस से कांग्रेस मैन साल्वाडोर बेल्लारा जूनियर(Salvador Belaro Jr) जलसा में शामिल हुए। कांग्रेस में एक उच्च स्थान रखते हैं। कहते हैं कि मेरे लिए एक आंख खोलने का अनुभव था, जिस से बहुत कुछ जानने का अवसर मिला मेरे लिए सबसे हर्षजनक बात यह थी कि जमाअत के लोग एक-दूसरे से बहुत प्यार और उत्तम चरित्र से मिलते हैं और एक-दूसरे की यथा सम्भव मदद करने की कोशिश करते हैं। "

अत: यह जो ग़ैरों पर हमारी जमाअत का प्रभाव होता है इस को सामान्य परिस्थितियों में भी प्रत्येक को बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए। यह हर अहमदी की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि केवल कुछ दिनों के लिए दिखावा न हो बल्कि हमेशा के लिए यह प्रभाव है कहते हैं कि इस अनुभव ने इस्लाम के मेरे इस्लाम के बारे में ज्ञान को बहुत बढ़ाया है और मुझे एक ऐसी सुंदर इस्लामी शिक्षा से परिचित किया है जिस का मुझे पहले नहीं ज्ञान नहीं था। मुझे इस जलसा में आकर ही पता चला कि पता चला कि इस्लाम के बारे में जो बातें मीडिया पर प्राय कही जाती हैं उन का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है।

फिर, आयरलैंड के एक मेहमान, डैरेन हॉवेल्ट कोवेन्ट्री (Dareen Howlett Coventry) जो कि नेश्नल डयूरिसटी (Diversity) पुलिस दफतर के प्रमुख हैं, कहते हैं कि, यह मेरी पहला जलसा सालाना था जलसा के अवसर पर मुझे जमाअत अहमदिया के महत्वाकांक्षी सेवा करने वाले और नेक स्वभाव मित्रों के साथ मिलने का मौका मिला। (कार्यकर्ताओं की यह सेवा देखकर बहुत लोग बड़े प्रभावित होते हैं।) जिन्होंने "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं, का केवल शाब्दिक प्रकटन ही नहीं किया बल्कि अभिव्यक्त इन सभी श्रमिकों और शामिल होने वालों की निस्वार्थ और स्वयंसेवा सेवाओं की एक दुर्लभ अभिव्यक्ति थी। कहते हैं कि मैं आप लोगों का आभारी हूँ कि आप ने मुझे यह महान अवसर प्रदान किया और मुझे इस्लाम के बारे में विचार विमर्श करने और जलसा सालाना के कार्यक्रमों का आनंद लेने का मौका मिला है। " फिर कहते हैं " इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब से पहले जो नज़म पढ़ी गई थी उस का मुझ पर एक बड़ा गहरा प्रभाव हुआ।"

फिर हॉलैंड के एक मेहमान, श्री अरनौडवान डोरन (Arnoud van Doorn) ने लिखा, जलसा का माहौल बहुत मित्रतापूर्ण था। इस ज़बरदस्त आयोजन से मैंने बहुत कुछ सीखा है। इस पर मैंने लोगों के साथ यादगार मुलाकातें की हैं। परिवेश में एक सकारात्मक संदेश की सुगंध था। युवाओं की पूर्ण भागीदारी और नि:स्वार्थ सेवा ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया है मुझे युवाओं के साथ काम करने की एक नई आशा पैदा हुई है। मैंने असंख्य मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम समारोहों में भाग लिया है लेकिन युवाओं की ऐसी भरपूर भागीदारी मेरा पहला अनुभव है।

फिर यूके (UK) के क्वींस परिषद (Queens Council) के एक वरिष्ठ बैरिस्टर श्री डेविड मार्टिन (David Martin) वह कहते हैं, मैं जो कहने जा रहा हूं वह मेरे शब्द नहीं है बल्कि मेरे दिल की आवाज़ है। मैंने आज तक इस समारोह में भाग नहीं लिया है। क्या ही अच्छे लोग और सुंदर जमाअत है? मैं अपनी मां की तरफ से मुख्य रूप से एक यहूदी हूं, लेकिन मैं चर्च आफ इंग्लैंड में जाता रहा हूं। मैं पूरे आश्वासन से कह सकता हूं कि जलसा सालाना जैसा दृश्य मैंने कभी नहीं देखा।" कहते हैं आप लोग इस्लाम की क्या ही सुंदर तस्वीर हैं? मुझे आश्चर्य है कि इस अवसर पर बीबीसी के लोगों ने कोई दस्तावेज़ क्यों नहीं बनाया। (सुना है अब बी.बी.सी वाले बनाने की कोशिश कर रहे हैं।) ताकि लोगों को जमाअत अहमदिया और उनके विचारों और आस्थाओं और जीवन शैली के बारे में सूचित किया जाए।

सैरालियोन के एक मेहमान अब्दुल कबाबा कारगबो (Abdul Kabba Kargbo) साहिब अपने विचार व्यक्त करते हैं कि "मैं जलसा सालाना की व्यवस्था से बहुत प्रभावित हूं। यदि मैं यहाँ न आता और कोई मुझे बताता कि इस तरह सैंतीस हज़ार से अधिक लोगों को एक जगह पर तीन दिन के लिए एकत्र हुए और किसी प्रकार का कोई झगड़ा नहीं हुआ तो शायद में विश्वास नहीं करता। लेकिन यह सब कुछ अपनी आँखों से देख कर बहुत हैरान हूँ कि मैंने किसी को शिकायत करते नहीं देखा और सारे लोग बहुत विनम्रता और विनय के साथ सेवा कर रहे हैं।"

अत: हमारे जो कार्यकर्ता हैं, स्वयंसेवी हैं उनसे दूसरे बड़े प्रभावित होते है, एक ख़ामोश तब्लीग़ है कि हर कार्यकर्ता युवा, बूढ़ा, पुरुष, जवान है।

ये कुछ ग़ैरों की प्रितक्रियाएं हैं।

कुछ मुस्लिम भी शामिल हुए जो अपनी सरकारों के लीडर थे। उनका प्रतिनिधित्व भी कर रहे थे। उन की एक दो प्रतिक्रियाएं प्रस्तुत करता हूं।

अलहाज मुहम्मद वसलीम साहिब है जो नेशनल असेंबली गिनाकरी के उपाध्यक्ष हैं। डिप्टी स्पीकर कहें लें। यह कहते हैं कि, जलसा की व्यवस्था और अनुशासन देख कर बहुत प्रभावित हुए बावजूद तलाश करने के किसी भी विभाग में कोई कमी नज़र नहीं आई थी। बड़े स्तर पर व्यवस्था और शामिल होने वालों की बड़ी संख्या के बावजूद, किसी प्रकार की कोई ख़राब व्यवस्था नहीं थी कोई लड़ाई झगड़ा नहीं था"। कहते हैं कि " मुझे हज करने का भी मौका मिला है और कई इस्लामी देशों के धार्मिक कार्यक्रमों में शामिल हो चुका हूँ लेकिन इतनी उम्दा और सराहनीय व्यवस्था मैंने कहीं नहीं देखी और यही इस्लाम की सच्ची भावना है जो हमें यहाँ देखने को मिली ।" फिर कहते हैं कि " छोटे छोटे बच्चों का प्रशिक्षण भी असामान्य है। बच्चे पूछते हैं कि किसी चीज़ की ज़रूरत है? फिर हम जो चाहते हैं हमें उपलब्ध कर देते हैं और मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलते हैं। केवल एक बार नहीं बल्कि बार बार हमसे पूछते हैं। यहां विभिन्न देशों से लोग आए थे एक दूसरे के साथ ऐसे मिल रहा था जैसे आपस में भाई और एक दूसरे के प्रिय हैं। आप लोग अपने काम में सबसे आगे हैं और आप ही सही रास्ते पर हैं। कहते हैं मुझे विश्वास है कि आप लोगों के पीछे ख़ुदा तआला का हाथ है।" (लेकिन कुछ लोग इसलिए शामिल नहीं होते कि कुछ सांसारिक कारण उन्हें रोकते हैं।)। कहते हैं कि " हम इंशा अल्लाह तआला अपने देश वापस जाकर सरकार को इस ओर जरूर ध्यान दिलाएंगे कि वह जमाअत के प्रत्येक मामले में मदद करे ताकि आप की जमाअत हमारे देश में भी सही इस्लामी शिक्षाओं से हमें मार्गदर्शन कर सके। "

फिर गिनी कनाकरी हसन कीटा साहिब हैं जो पुलिस के राष्ट्रीय निदेशक हैं। कहते हैं "मेरा विभाग पुलिस से जुड़ा है। इसलिए मैं सुरक्षा के संबंध में विशेष समीक्षा की। सुरक्षा की ज़बरदस्त प्रणाली थी जिसमें मुझे कोई कमी नज़र नहीं आई " और कहते हैं कि " इमाम जमाअत अहमदिया के भाषण सुनने के बाद मुझे अपने मुसलमान होने पर गर्व महसूस होने लगा है। "

फिर सिएरा लियोन के एक मेम्बर आफ पार्लियामेन्ट अली कलाको (Alie Kaloko) साहिब कहते हैं कि "अहमदियत ही इस्लाम की वास्तविक तस्वीर है। अहमदी मुसलमान शांति को बढ़ावा देने के लिए जो प्रयास कर रहे हैं वह मूल्यवान हैं। आजकल इस्लाम का नाम चारों तरफ आतंकवाद के साथ सम्बंधित किया जाता है लेकिन अहमदी इस धारणा को ग़लत साबित कर रहे हैं। जलसा की व्यवस्था बहुत बढ़िया थी। छोटे बच्चे भी लोगों की सेवा पर तैनात थे यह नज़ारा रूह को आन्नद देने वाला था और मुझे लगता है कि जमाअत अहमदिया की सच्चाई साबित करने के लिए यह नज़ारा ही पर्याप्त है।"

फिर तुर्कमेनिस्तान के एक दोस्त अब्दुल साहिब जलसा में शामिल हुए। कहते हैं कि "कहते हैं कि मैंने लगभग दो साल पहले अपने एक दोस्त से इस जमाअत के बारे में सुना था, जिसका नारा "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं" है " कहते हैं " मैं जिस दिन से लंदन आया हूँ प्यार और मुहब्बत से घिरा हुआ हूँ

जैसा कि अपने वास्तविक माता-पिता और परिजनों के बीच हूँ। जिन बातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया और मेरे दिल पर गहरा असर छोड़ा है उनमें से एक तो यह है कि जिस दिन हम लोग तुर्कमेनिस्तान से लंदन पहुंचे तो हमें एयरपोर्ट से होटल ले जाया गया। जब हम वहां पहुंचे तो ड्यूटी पर मौजूद अहमदी लड़कों ने सलाम करने के बाद जल्दी से कहा कि आप लोग यात्रा कर के आए हैं आप को भूख लगी होगी इसलिए आप पहले खाना खा लें फिर आराम करें। यह बात सुनकर मुझे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह हदीस याद आ गई जब एक बार एक जलसा में एक मेहमान आया तो आप ने इसके बारे में एक सहाबी को कहा था कि उसे कौन लेकर जाएगा। फिर उन्होंने आतिथ्य के बारे में वे पूरी लम्बी हदीस सुनाई थी। तो बहरहाल फिर वह कहते हैं कि जलसा में शामिल होकर मुझे यह बात समझ आ गई है कि मैंने अपना सारा जीवन अल्लाह तआला की तलाश में बिताया लेकिन अल्लाह तआला बस यहां आकर ही पाया है। मुझे अल्लाह तआला की कृपा से आलमी बैअत के भव्य समारोह में शामिल होकर बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली। (यहां आए थे और बैअत कर ली।) जिस समय मुझ से बातें कर रहे थे बड़े भावुक हो रहे थे। कहते हैं जिस समय में बैअत कर रहा था और मेरी आंखों से आंसू जारी थे और वह आँसू हैं जो मेरे पिता की मृत्यु पर भी न निकल सके। यह आँसू ज़ाहिर में लगता था कि शायद बिना किसी कारण के हैं लेकिन बाद में मुझे समझ आया कि धरती पर अब एक ऐसी उम्मीद पैदा हो गई है और लाखों लोगों की एक ऐसी जमाअत पैदा हो गई है जो अपनी हस्ती में बेनज़ीर है और यह जमाअत अपने कर्म से प्रत्येक कठिनता और आपदा को दुनिया से दूर और मुक्त करने के लिए हर कुर्बानी देने के लिए तैयार है।

फिर कुछ नए अहमदी जब प्यार और भाईचारे के नज़ारे देखते हैं उनके ईमान में अधिक वृद्धि होती है।

जमैका (Jamaica) से शामिल होने वाली एक नई अहमदी महिला विंसन विलियम्स (Winson Williams) साहिबा कहती हैं कि " जलसा सालाना में ख़लीफतुल मसीह की तकरीरें और विशेषकर आलमी बैअत एक भावनात्मक अनुभव था। " कहती हैं " जब मुझे पता चला कि यहां कई कार्यकर्ता स्वयंसेवक सेवा करते हैं तो मुझे ख्याल आया कि इन कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए जमाअत को कई मुश्किलें सम्मुख होंगी। लेकिन जब मैंने इन कार्यकर्ताओं को नि:स्वार्थ सेवा करते देखा तो मुझे एहसास हुआ कि यह एक इलाही जमाअत और समय के ख़लीफा को सीधे अल्लाह तआला से समर्थन व सहायता प्राप्त है।" कहती हैं " विशेषकर कार पार्क में सेवा करने वाले ख़ुद्दाम मौसम की ख़राबी के बावजूद दिलजोई से अपने कर्तव्यों को अदा करते देखकर आश्चर्य में पड़ गई और यह नज़ारा मैंने अपने पूरे जीवन में पहले कभी नहीं देखा था।"

आइवरी कोस्ट से एक शहर के मेयर ज़राकिया दोपे ज़ोजे (Zrakpa Dopeu) साहिब आए। कहते हैं "मैंने जब इस्लाम अहमदियत स्वीकार किया तो लोगों से बहुत नकारात्मक बातें सुनने को मिलीं। मुझे इस्लाम का बहुत ज्यादा ज्ञान तो नहीं था। इसलिए मैं बहुत परेशान हुआ कि मैं कैसे फैसला कर सकता हूं कि अहमदी मुसलमान है या नहीं? बहरहाल कहते हैं कि मुझे विचार आया कि मैंने कहीं जमाअत में शामिल होकर कोई गुनाह तो नहीं कर लिया। इसलिए जब मैंने जमाअत के साथ संपर्क किया तो उन्होंने मुझे जलसा सालाना में शामिल होने की दावत दी कि वहाँ पर जा के जमाअत को निकट से देख लें। " कहते हैं "जब मैं यहाँ आया तो मैंने इस्लाम की मूल तस्वीर देखी। समय के ख़लीफा का हर भाषण अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम से शुरू होता और अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम पर ही ख़त्म होता। फिर जलसा के माहौल को देखने के बाद, मुझे अपने प्रश्नों के उत्तर मिले हैं कि क्या अहमदी एक मुसलमान हैं या नहीं अब मैं गर्व से कह सकता हूं कि जो काम मुझ से हुआ था वह बिल्कुल सही था। अहमदी ही वास्तविक मुस्लिम है और मैं संतुष्ट हूं। अहमदियों के सारे काम गतिविधियां कुरान और हजरत मुहम्मद मुस्तफा के आदेशों के अनुसार हैं।"

बेलीज़ (Belize) की राजधानी बेलमपान के मेयर ख़ालिद बलायल (Khalid Belisle) भी जलसा में शामिल हुए। कहते हैं कि जलसा में शामिल होना एक महान अनुभव है ऐसा लग रहा था कि जमाअत में प्रत्येक व्यक्ति मेरी ही सेवा कर रहा था। इस अनुभव से मेरे दिल में इस्लाम सीखने के लिए बहुत रुचि पैदा हुई है। यहां से मैं भाईचारा और प्रेम का पाठ अपने देश में वापस लेकर जा रहा हूँ। यह एक एसी चीज़ है जो मुझे अक्सर विभिन्न स्थानों पर नज़र आती है। काश मैं इसे अपनी बोतल में बंद करके अपने साथ बेलीज (Belize) ले जा सकता ताकि अपने देशवासियों के साथ बांटता।" फिर कहते हैं कि " जलसा की व्यवस्था बहुत ही उच्च स्तर की थी। जिस प्रकार मुझे यहां स्वागत किया गया है उसे हमेशा याद रखूंगा मैं यहाँ लोगों का हमेशा आभारी रहूंगा कि आप ने मुझे यहाँ आने के लिए आमंत्रित किया।" फिर कहने लगा कि " एक दिन में मेहमानों की मार्की में अकेला था तो कुछ ख़ुद्दाम मेरे पास आ गए। मुझे पता था कि लोग सिर्फ मेरे पास आए थे कि मैं बाहर से आया था और शायद मैं अकेला महसूस कर रहा हूंगा । इस बात ने मेरे दिल पर बहुत गहरा प्रभाव किया कि यहां युवाओं को इस बात का अनुभव है कि हम ने अपने मेहमानों के साथ कैसे पेश आना है।"

फिर वैश्विक बैअत का भी ग़ैरों पर प्रभाव पड़ता है। एक बात जो मैंने पहले बताई थी वहाँ एक और घटना है क्रोएशियाई संसद के विधायक जलसा में शामिल हुए उनका नाम ऊच क्विक डोमांगो (Mr. Hajdukovic Domangoj) है। वैश्विक बैअत के बारे में उन्होंने कहा, "वैश्विक बैअत समारोह ने मुझे बहुत प्रभावित किया ईसाई धर्म की faith reconfirmation समारोह में कई बार शामिल हुआ हूं लेकिन जो भावनाएं ईमानदारी और धर्म के प्रति वफादारी का प्रतिबद्धता जमाअत अहमदिया की वैश्विक बैअत में देखी है वह एक अजीबो ग़रीब और अद्भुत अनुभव था जिसे मैं सारी उम्र याद रखूँगा। "

फिर एक मिस्र के डॉक्टर रशवानी सहिब कहते हैं कि "वह वैश्विक बैअत के समय जलसा स्थल में प्रवेश किया और लोगों की कतारें जो जलसा स्थल से बाहर दूर तक फैली हुई थीं देखकर बहुत प्रभावित और हैरान हुए।" कहते हैं " हमारे देश मिस्र में इस तरह का भावना पर काबू पाना असंभव है उनकी भावनाएं इतनी भर गईं कि वे बैअत समय एक पंक्ति में शामिल हो गए और इस्तिग़फार और अरबी शब्द जो थे वे दोहराने लगे।" (लेकिन उन्होंने दोहराए थे इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने बैअत कर ली। इन केवल एक भावनात्मक स्थिति थी जो छा गई थी), लेकिन उन्होंने कहा कि, बहरहाल अब इस तरफ ध्यान देंगे।"

प्रेस ने भी ध्यान दिया है जलसा के माहौल से प्रभावित हो कर प्रेस भी अब इस्लाम के बारे में बहुत सारी सहीह ख़बरें देने पर मजबूर है।

फ्रांसीसी अखबार लिबरेशन की पत्रकार सोनिया डेले साले (Sonia Delesalle) हैं वह अपने विचार बयान करती हुई कहती हैं " जब मैं यहां पहुंची तो पहले मुझे परेशानी हुई कि यहां महिलाओं और पुरुषों को अलग अलग रखा गया है। लेकिन फिर जब मैंने जलसा स्थन का दौरा किया, मैंने देखा कि महिलाओं के बजाय पुरुष खाना बना रहे थे। फिर महिलाओं वाले भाग में समय बिताया तो मुझे पता चला कि महिलाओं के अलग प्रबंधन के कारण महिलाएं अधिक स्वतंत्र थीं और सबसे बढ़कर महिलाओं को पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त थी और वे हर काम अपनी इच्छा से कर रही थीं।" (अत: यहां रहने वाली हमारी जो कुछ बच्चियां पढ़ाई के नाम पर और स्वतंत्रता के नाम पर समझती हैं कि हम पर अत्याचार हो रहा है उन्हें यह सोचना चाहिए कि दूसरों को भी हमारा परिवेश ही पसंद आता है।)

फिर बोलीविया (Bolivia) के राष्ट्रीय समाचार चैनल के एक पत्रकार ने अपने विचार बताते हुए कहा कि पश्चिम के निकट इस्लाम महिलाओं को पीछे रखता है और उनकी कोई स्थिति नहीं है लेकिन मैंने यहाँ देखा कि इमाम जमाअत अहमदिया तो उच्च उपलब्धियां प्राप्त करने वाली महिलाओं को पुरस्कार दे रहे हैं और प्रत्येक महिला को व्यक्तिगत रूप से पुकारा जा रहा है तो मेरे दिल में तीव्र इच्छा पैदा हुई कि मैं वापस जाकर अपने अखबार में इस संबंध में जरूर लिखूँगा। क्या किसी नेता ने दुनिया में महिलाओं को संबोधित किया है? कभी नहीं।"

फिर एक पत्रकार महिला विश्व बैअत के समय बैअत के शब्दों को दोहराने नग गईं पूछने पर कहने लगीं कि " मुझे नहीं पता कि उस समय मुझे क्या हो गया था लेकिन मेरे जीवन में इस तरह की भावना और भावनाऐं पहले कभी नहीं आईं और मैं अपने आप ये शब्द दोहराती चली गई। पहले मुझे विश्वास था कि ऐसे समारोहों में भावनाओं को लाने के लिए संगीत आवश्यक होगा।" कहती हैं " संगीत के बिना तो भावनाएं उभर ही नहीं सकतीं लेकिन अब मुझे पता चला कि विश्व बैअत के दौरान यह भावना तो अहमदियों के दिल से सीधे निकल रहे थे और किसी प्रकार के संगीत की यहाँ ज़रूरत नहीं थी।"

बोलेविया से एक पत्रकार कार्लोस जेमी ओरियास (Carlos Jamie Orias) एक पत्रकार हैं। कहते हैं " जिस ने मुझे जमाअत अहमदिया के बारे में सब से अधिक प्रभावित किया व हजमाअत-ए-अहमदिया की शान्ति सी स्थापना के लिए जोश और इस के लिए कोशिशें हैं। यह एक ऐसा संदेश है जो आज के युग में बहुत महत्वपूर्ण और ज़रूरी है। इसी तरह जमाअत अहमदिया के विभिन्न राष्ट्रों

और विभिन्न संस्कृतियों के लोगों को इस्लाम धर्म की मूल आधार पर प्रस्तुत करने की इच्छा भी सराहनीय है। ' फिर यह कहते हैं " यह बात भी मेरे लिए विशेष आश्चर्य में डालने वाली थी कि इतना व्यापक और बड़ा प्रबंध केवल स्वयंसेवकों की मदद से किया जाता है। इससे पता चलता है कि कोई काम भी चाहे कितना कठिन क्यों न हो वह विश्वास, ईमानदारी और नि:स्वार्थ मेहनत से प्राप्त किया जा सकता है।" फिर कहते हैं कि " इमाम जमाअत अहमदिया ने पुरुष और महिला के अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में तकरीर की। इस से मेरे बहुत से संदेह दूर हुए। इस भाषण से पुरुष और महिला के बारे में इस्लामी शिक्षा का ज्ञान मुझे अधिक स्पष्ट हुआ।" फिर कहते हैं "अहमदी महिलाओं की उच्च उपलब्धियां भी अच्छा प्रभाव डालने वाली बात थी। इस से साबित होता है कि पुरुष और महिलाओं दोनों के लिए अनिवार्य है कि को दुनिया में शांति के लिए कोशिश करें। पहले ख़ानदान के स्तर पर फिर समुदाय के स्तर पर, फिर देश और दुनिया के स्तर पर।" और फिर कहते हैं "अन्तिम संबोधन जो था वह जिस तरह जमाअत अहमदिया के लिए आवश्यक है उसी तरह बाकी दुनिया और बाकी देशों के इसके लिए आवश्यक है। "

बहरहाल जलसा का परिवेश और ड्यूटी देने वालों का एक प्रभाव है जो हर न्यायप्रिय को प्रभावित करता है। अल्लाह तआला उन सभी ड्योटी देने वालों को और शामिल होने वालों को बदला दे जो इस्लाम की इस तरह ख़ामोश तब्लीग़ का हिस्सा बनते हैं। हमें विशेषकर उन हज़ारों कार्यकर्ताओं को लड़कों और लड़कियों, पुरुषों और महिलाओं को अपनी दुआओं में याद रखना चाहिए। इस बार बारिश के कारण कुछ व्यवस्था में कमी भी हुई या वैसे भी कमी हो जाती है लेकिन इसके बावजूद कार्यकर्ताओं ने समझदी और मेहनत से इस कमी को अधिक महसूस नहीं होने दिया। पानी की आपूर्ति भी कुछ समय बंद हो गई लेकिन सामान्य प्रबंधन बेहतर था। जलसा में शामिल होने वाले अधिकतर अहमदियों जो अपनी प्रतिक्रियाएं लिखी हैं, वे अच्छे हैं। लेकिन कुछ नकारात्मक प्रभाव हैं। हालांकि, जैसा कि मैंने कहा था, इतने बड़े अस्थायी प्रबंधन में बहुत सारी समस्याएं हैं। लेकिन सभी काम करने वाले स्वयंसेवी लड़के लड़कियां बच्चे बहरहाल हमारे धन्यवाद के पात्र हैं और प्रशासन को भी मैं कहूंगा कि कुछ लोगों द्वारा आई हुई जो शिकायतें हैं या ध्यान दिलाने वाली बातें हैं वे उन्हें भिजवा रहा हूँ उन्हें अपनी "लाल किताब"में नोट कर लें और आगे सुधार करने का प्रयास करें।

इसी तरह प्रेस ने भी बड़ी अच्छी कवरेज भी दी है। जलास सालाना के हवालासे 358 ख़बरें मीडिया के माध्यम प्रकाशित की गई हैं और इन में अब और वृद्धि हो रही है। ऑनलाइन मीडिया के माध्यम से 36 मिलयन लोगों तक संदेश पहुंचा। टीवी और रेडियो पर प्रसारित समाचार के द्वारा, 31 मिलयिन से अधिक और प्रिंट मीडिया के द्वारा 2 मिलियन लोगों तक सन्देश पहुंचा। इसके अलावा, सोशल मीडिया के द्वारा 58 मिलियन लोगों तक संदेश गया है। आख़री दिन एम.टी.ए की जो लाइव स्ट्रीमिंग थी इस के द्वारा आख़री दिन जो मेरा भाषण था वही लाइव स्ट्रीमिंग पर लगभग दस लाख लोगों ने सुना। इसी प्रकार एक ओर माध्यम के अनुसार सभी माध्यमों से 128 मिलियन से अधिक लोगों तक सन्देश पहुंचा है।

जिन प्रसिद्ध मीडिया आउटलीटस (Outlets) ने जलसा बारे में कवरेज की है उनमें बीबीसी टीवी, बीबीसी रेडियो, आई टीवी, इन्डीपेनेडनट अख़बार है, द टाइम्स अखबार है, संडे एक्सप्रेस है। लंदन इवनिंग स्टैंडर्ड है, न्यूयॉर्क टाइम्स और फेसबुक लाइव है। फिर एसोसिएटेड प्रेस और प्रेस एसोसिएशन, स्पैनिश समाचार एजेंसी ई एफ ई, भारतीय समाचार एजेंसी पीटीआई, फ्रेंच समाचार लिबरेशन और यूनिलाड (UniLad) हैं।

बहरहाल प्रेस के माध्यम से इतने व्यापक रूप से जमाअत अहमदिया का यह सारा संदेश और इस्लाम का असली संदेश पहुंचा इस बात पर भी हमें अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए।

अफ्रीका में जलसा सालाना की एक कवरेज हुई। अफ्रीका में एम.टी.ए अफ्रीका के अलावा दस चैनलों पर जलसा सालाना का प्रसारण दिखाया गया जिन पर विभिन्न देशों में एक सौ पचास से अधिक घंटों में शामिल कवरेज की गई। इन चैनलों के माध्यम से, लगभग 60 लाख से अधिक लोगों तक जलसा सालाना की कारवाई पुहंची। इन दस चैनलों ने वैश्विक बैअत और मेरे सारे ख़िताब जो थे,तकरीरें थीं उन्हें लाइव प्रसारित किया। सिएरा लियोन राष्ट्रीय टीवी ने लगातार सौ घंटों पर आधारित तीनों दिन जलसा सालाना की कार्रवाई प्रसारित की जबकि बो (Bo) और कीनियमा (Kenema) टीवी ने जलसा सालाना की कार्रवाई पूरी तरह प्रसारित करने के लिए अपनी घरेलू प्रसारण बंद कर दिए। इसी तरह, सारे देश में तीन दिन जलसा की पूरी प्रक्रिया देखी और सुनी गई थी। गंबिया में, पहली बार राष्ट्रीय टेलीविज़न ने जलसा सालाना की तकरीरें और अन्य कार्यक्रमों को दिखाया।

जलसा सालाना के सीधे प्रसारण के अलावा बीबीसी यूगांडा ने जलसा सालाना की सवाहली भाषा में ख़बर प्रसारित की और यह भी इस क्षेत्र में पर्याप्त देखा जाता है। लगभग 20 मिलियन लोग देखते हैं। घाना राष्ट्रीय टेलीविजन और रेडियो और न्यूज स्टोर्स के माध्यम से करीब पांच लाख लोगों तक ख़बर पहुंची दी। अख़बारों के माध्यम से सभी अफ्रीकी मीडिया को मिलाकर, जलसा सालाना यू.के की ख़बर करीब पांच लाख लोगों तक पहुंचीं।

यह अल्लाह तआला की कृपा है हमारे प्रयास इसमें बहुत मामूली होते हैं और इस लिहाज़ से जो भी मामूली प्रयास हैं उसके लिए हमारा प्रेस और मीडिया विभाग जो है उसका भी धन्यवाद करूंगा और दूसरे देशों में जो प्रेस और मीडिया विभाग हैं उन्होंने भी काम किया अल्लाह तआला उन सभी को फल दे। बहुत बड़े पैमाने पर ख़बरें फिर तब्लीग़ का कारण बनती हैं। जमाअत की परिचय होता है। अल्लाह तआला करे कि हम अपनी ज़िम्मेदारियों को हमेशा अदा करने वाले हों और अल्लाह तआला के फज़्लों को अवशोषित करने के लिए हमेशा धर्म को दुनिया पर प्राथमकिता करते हुए अपने कर्तव्यों को अदा करने वाले हों।

इसी तरह एक बात रह गई थी वह भी मैं वर्णन कर दूं। इस साल भी पिछले साल की तरह कनाडा से साढ़े तीन सौ के करीब ख़ुद्दाम आए थे जिन्होंने वकारे अमल करके वायंडाप (Wind up) में भाग लिया और इस बार यह जहाज़ चार्टर कराकर आए थे। उन्होंने बड़ा अच्छा काम किया। चार पाँच दिनों से काम कर रहे थे। जलसा के अन्त से लेकर अंत तक, और ख़ुदा की कृपा से बहुत काम समेटा गया है जो थोड़ा बहुत रह गया है वह आज से फिर ब्रिटेन के ख़ुद्दाम कर रहे हैं बल्कि कल से ही शुरू कर चुके हैं। अल्लाह तआला उन सभी को बदला दे कनाडा के जो ख़ुद्दाम हैं वह जलसा से पहले आ गए थे। मुझे उम्मीद है कि उन्होंने जलसा सुना होगा है और अगर यह नहीं सुना कि बड़ी गलती की है इसलिए यदि आप आगे आना चाहते हैं, तो जलसा को तीन दिनों में जलसा को सुनो और फिर अपने वायनड अप के कार्यक्रम में भाग लें। अल्लाह तआला सब काम करने वाले कार्यकर्ताओं, को बदला दे और हमें भी इस जलसा में जो हमें सीखने का मौका मिला है इस को अपने जीवन का एक हिस्सा बनना की तौफीक प्रदान फरमाए।

नमाज़ों के बाद मैं कुछ नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ऊंगा। एक नमाज़ जनाज़ा मुकर्रमा साहिबज़ादी ज़किया बेगम साहिबा का है जो कर्नल मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहिब की पत्नी और हज़रत नवाब अमतुल हफीज़ बेगम साहिबा और नवाब अब्दुल्लाह खान साहिब की बेटी थीं। यह 23 जुलाई की रात को ताहिर हार्ट इंस्टीयूट में 94 वर्ष की आयु में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रेजेऊन।

आदरणीय साहिबज़ादा कर्नल मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहिब जिन की यह पत्नी थीं हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब के बेटे थे । इस प्रकार यह मोदी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्लाम की नवासी भी थीं और आप के एक पोते की पत्नी भी। पिछले तीन चार सालों से काफी बीमारी थी बल्कि अब पिछले कुछ महीनों से अस्पताल में दाख़िल थीं। अल्लाह तआला की कृपा से मूसिया थीं। बड़ी पुरानी इन की वसीय्यत थी। उनकी औलाद पांच बेटियां थीं अमतुश्शाफी साहिबा, आदरणीय महमूद अहमद खान साहिब की पत्नी। यह भी हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा का पोते थे। इसी तरह अमतुन्नासिर इन के मियां सैयद शाहिद अहमद थे। अमतुल मुसव्विर यह डॉ नूरी की पत्नी है और अमतुल मुइज़ यह अमरीका में मंज़ूरुर्हमान हैं उनकी पत्नी हैं। और अमतुन्नसीर निगहत यह राजा अब्दुल मलिक साहिब की पत्नी हैं। अल्लाह तआला इन के बच्चों को नेकी और तक्वा में वृद्धि करने की तौफीक प्रदान फरमाए और अपने बुज़र्गों की नेकियों को जारी रखने की तौफीक प्रदान फरमाए।

आदरणीया ज़किया बेगम साहिब, कराची में मुहम्मद अली सोसाइटी के सदर के रूप में भी कार्य करती हैं। कोहाट में रहने के दौरान भी लजना की गतिविधियों में भाग लेने में भी तौफीक मिला। नवाब अमतुल हफीज़ साहिबा ने अपने बच्चों के बारे में जो एक लेख लिखा उस में इन की बहुत प्रशंसा की कि, नवाब अबदुल्लाह साहिब फौत हो गए थे तो विशेष रूप से उन्होंने अपनी माता की सेवा की। उन्होनें इस का बहुत अधिक उल्लेख किया। इसी तरह डाक्टर नूरी साहिब कहते हैं कि आतिथ्य के गुण में बहुत विशेष थीं और बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक की मेहमान नवाज़ी करती थीं। और स्वागत करती थीं। इसी तरह डॉक्टर नूरी साहिब कहते हैं

कि जब मैंने सेवानिवृत्ति के बाद वक्फ किया तो उन्होंने मुझे कहा कि मेरी इच्छा थी कि कोई बेटा होता तो वक्फ करती और तुम्हारे वक्फ से मेरी यह इच्छा भी पूरी हो गई। अल्लाह तआला उनके स्तर बढ़ाए और क्षमा और रहम का व्यवहार फरमाए।

दूसरा नमाज़ जनाज़ा, तारिक मसूद, साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला का है। यह मसूद अहमद ताहिर साहिब के पुत्र और नज़ारत इस्लाहो इर्शाद केंद्रीय में मुबल्लिग़ थे। 24 वर्ष की उम्र में, 24 जुलाई को, रब्बवा में बिजली का करंट लगने से वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। इन के परिवार में, अहमदियत इन के पड़दादा आदरणीय मेहर बख्श साहिब के माध्यम से आईष रोजौरी कश्मीर से सम्बन्ध था। मेहर बख्श साहिब 1920 में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी के हाथ पर बैअत कर के अहमदियत में दाखिल हुए थे। तारिक मसूद साहिब ने तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल से 2007 ईं स्नातक पास किया। और 2016 में एफ.ए की परीक्षा दी। 2014 में जामिया पास किया युवा मुरब्बी थे, लेकिन बहुत ईमानदारी, शरीफ, माता-पिता का ध्यान रखने वाले, दोस्तों का ध्यान रखने वाले और ग़रीबों का ध्यान रखने वाले। कई ग़रीबों ने बाद में बताया कि अपने मामूली भत्ता से भी उनकी मदद किया करते थे। एक दिन के बाद उनकी शादी होने वाली थी लेकिन इससे पहले ही अल्लाह तआला ने अपने पास बुला लिया। अल्लाह तआला उन के स्तर बढ़ाए क्षमा और रहं का व्यवहार करे। मरहूम मूसी थे उनके पीछे रहने वालों में माता पिता के अलावा तीन भाई आदरणीय अशफ़ाक़ अहमद ज़फर साहिब, सरफराज़ अहमद जावेद साहिब, अताउर्रहीम साहिब और एक बहन फूज़िया मसूद साहिबा हैं। उनकी माँ लिखती हैं कि चन्दों में बढ़ चढ़कर न केवल भाग लेते बल्कि हमें भी कहते कि चन्दों में भाग लिया करें। उनके पिता बताते हैं कि ख़िलाफत से बेहद प्यार करते थे। बहुत ही नेक आदमी थे। नमाज़ जमाअत के साथ हमेशा आदत थी मुरब्बी बनने से पहले भी परिजनों को नमाज़ों की हिदायत देते रहते थे। कहते हैं फज्र की नमाज़ के बाद आकर नियमित कुरआन की तिलावत किया करते थे और उन्हें देखकर हमें भी अपनी कमज़ोरियों पर शर्मिंदगी होती थी और बहुत प्यार से व्यवहार करने वाला, बहुत आज्ञाकारी बेटा था। घर वालों से, माता-पिता से कभी विवाद नहीं किया, और अगर मतभेद हो भी तो बड़े धैर्य से समझाया करते थे। ख़िलाफत के लिए बहुत ग़ैरत रखते थे। कहीं भी अगर को ऐसी बात करता जो जमाअत के निज़ाम या ख़िलाफत के पद के विरुद्ध होती तो तुरंत उन्हें रोकता और अगर वे न रुकते तो इस मज्लिस से उठकर चला जाता। अल्लाह तआला उन के स्तर उंचा फरमाए और उन के माता पिता को भी धैर्य और सब्र प्रदान करे।

तीसरा जनाज़ा आदरणीय शकील अहमद मुनीर साहिब का है जो ऑस्ट्रेलिया के पूर्व मिशनरी इन्चार्ज थे और इस समय कराची में थे। 31 जुलाई को 85 साल की उम्र में उन की वफात हुई। इन्ना लिल्लाहव इन्ना इलैहि राजेऊन। उन्हें कुरआन करीम का माओरी (Maori) भाषा में अनुवाद करने की तौफ़ीक़ भी मिली। प्रान्त बिहार मुंगेर भारत के रहने वाले थे। आप के पिता हकीम ख़लील अहमद साहिब बिहार के प्रारंभिक अहमदियों से थे जिन्होंने 1906 ई में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी लेकिन दस्ती बैअत नहीं कर सके। और उनके पिता को भी नाज़िर तालीम कादियान के रूप में दस साल सेवा करने की तौफीक मिली। आदरणीया शकील मुनीर साहिब की प्रारंभिक शिक्षा तालीमुल, इस्लाम कॉलेज कादियान और लाहौर से हुई। फिर ढाका से एम.एस.सी भौतिकी की डिग्री। फिर शिक्षा के क्षेत्र में शामिल हो गए। मुलाज़मत का लम्बा समय पश्चिम अफ्रीका के देशों में गुज़ारा। इस अवधि के दौरान धर्म की सेवा भी करते रही। नाइजीरिया के संघीय मंत्रालय के शिक्षा मंत्रालय में मुख्य शिक्षा अधिकारी के रूप में कार्य करें। अहमदिया मिशन वारी (Warri) नाइजीरिया के पूर्वी राज्यों के आठ साल तक क्षेत्रीय सदर रहे और उन्होंने और उनकी पत्नी ने नुसरत जहां अकादमी वा (Wa) का शुभारंभ किया कि नुसरत जहां योजना के तहत बनने वाला, जारी होने वाला पहला स्कूल कॉलेज और संस्था थी। आप को तब्लीग़ करने के लिए भी बड़ा शौक था। नाइजीरिया में, दो सफल अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी भी आयोजित करवाईं। इस निवास के दौरान, आप ने इस्लाम और ईसाई धर्म पर भी कई पुस्तकें लिखी हैं। उनकी कुछ किताबें जो उन्होंने लिखें हैं Islam in Spain, Shroud and other discoveries about Jesus, The reform taleem-el-islam course book और नाइजीरिया में अपने खर्च पर एक मिशन हाउस भी उन्होंने बनवाया। एक रोया के मद्देनजर, उन्होंने अपने आप को वक्फ के लिए समर्पित कर दिया। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि रहमहुल्लाह ने उनका वक्फ स्वीकार किया और उन्हें ऑस्ट्रेलिया का पहला अमीर और मिशनरी इन्चार्ज निर्धारित किया। अत: 5 जुलाई 1985 ई को ऑस्ट्रेलिया गए। ऑस्ट्रेलिया में उनके लिए वीज़ा प्राप्त करने में कठिनाइयां थीं मुस्लिम मुबल्लिग़ को वीज़ा नहीं देते। बहरहाल वहां डाक्टर एजाज़ुल हक साहिब के प्रयासों के साथ, यह वीज़ा भी उन्हें मिल गया और उन्होंने काम शुरू किया। ऑस्ट्रेलिया की जो मस्जिद बैतुल हुदा है और बड़ी सुन्दर मस्जिद है इस मस्जिद के निर्माण में उन का बहुत हाथ है। 30 सितम्बर 1983 ई को इस मस्जिद का शिलान्यास हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि ने रखा था फिर इस के बावजूद वित्तीय स्थिति अच्छी न होने के परिश्रम से उन्होंने करवाई। वकारे अमल द्वारा बहुत काम किया गया था ख़ुद भी वकारे अमल किए बल्कि काम के दौरान एक बार सीढ़ी से गिर गए और उनके हाथ की हड्डी भी टूट गई लेकिन फिर भी उन्होंने मस्जिद का निर्माण जारी रखा और एक बहुत सुंदर और बड़ी मस्जिद वहाँ बन गई है। ख़ुद उस समय जब वे गए हैं, वहां कोई जगह नहीं थी। जहां जमाअत ने ज़मीन ख़रीदी थी। वहां एक टीन का शेड था। इस की छाया में, एक भाग में नमाज़ होती थी और दूसरे भाग में, टीन की छत डालकर और कपड़े की छत डाल कर ये दोनों पती पत्नी रहते थे। उन्होंने वहां गुज़ारी किया और बहुत कुरबानी की। 1991 ई में उनकी नियुक्ति फिर नाइजीरिया में हुई अलारवा में प्रिंसीपल जामिया अहमदिया के रूप में सेवा करते रहे। 1989 ई में जब जमाअत अहमदिया की शत वर्षीय जयंती हुई है तो उस वक़्त हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने कुरआन की चयनति आयतों का दुनिया की सौ भाषाओं में अनुवाद करने के लिए तहरीक की। ऑस्ट्रेलियाई के ज़िम्मे मओरी भाषा का अनुवाद दिया गया था जो अनुवाद तब करवाया गया उसकी गुणवत्ता जब देखी गई तो वह अच्छा नहीं था बल्कि वह कहते हैं बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्राहीम का अनुवाद जिसे से माओरी में करवाया गया था उस ने लिखा था In the name of Jesus है। तो उन्होंने हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे को कहा कि यह तो अनुवाद सही नहीं है। फिर उस बुढ़ापे में उन्होंने ख़ुद भाषा सीख ली। बड़ी उम्र में भाषा भी सीखी और अनुवाद पूरा किया और 2013 ई में जब मैं न्यूज़ीलैंड गया, माओरी कुरआन का अनुवाद पूरी तरह से माओरी राजा को दिया गया था। इस आयोजन में यह भी शामिल थे। बड़े विनम्र इंसान और बेनफ्स मनुष्य थे। न ज्ञान की बड़ाई का कोई इहसास था, न यह इहसास कि मैंने कुरआन करीम का अनुवाद किया है तो मेरा कोई सम्मान होना चाहिए। दुनिया भी उन्होंने बहुत कमाई और बिन इलाउंस के यह मिश्नरी का काम करते रहे। अल्लाह तआला उन पर रहम करे । उन की पत्नी को सब्र और हौसला प्रदान फरमाए। भविष्य में भी अल्लाह तआला हमें कुरबानी करने वाले मिशनरी देता रहे जो प्रत्येक दृष्टि से बेनफ्स और विनीत हों।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -8)

☆ जब मस्जिद यहाँ बन जाएगी तब पता लगेगा कि मस्जिद के बनने से नफरतों के नारे नहीं लगते बल्कि प्यार और स्नेह की आवाज़ें आएंगी, मुहब्बत और स्नेह के नारे पनपेंगे। ☆ देशों और सरकारों में आपस में जो दुश्मनियाँ बढ़ रही हैं इस वजह से युद्ध का ख़तरा पैदा हो रहा है, इसके लिए हम सब को शांति की कोशिश भी करनी चाहिए और इसके लिए दुआ भी करनी चाहिए। ☆ राजनीतिज्ञ अपनी सरकारों को इस बात पर तय्यार करें कि युद्ध के बजाय शांति और प्रेम के प्रसार की हमें अधिक कोशिश करनी चाहिए, सुलह और मुहब्बत के प्रसार की हमें अधिक कोशिश करनी चाहिए। ☆ कानून की पाबन्दी के विषय में और देश से प्रेम के विषय में इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने इस सीमा तक कहा है कि यह तुम्हारे ईमान का हिस्सा है। ☆ मुझे उम्मीद है कि इंशा अल्लाह जब यह मस्जिद निर्माण हो जाएगी तो यहां के रहने वाले अहमदी जहां इस मस्जिद में इबादत करेंगे वहाँ अपने देश और राष्ट्रीय विकास के लिए भी उत्कृष्ट भूमिका निभाने वाले होंगे

रोनहायम मस्जिद के शिलान्यास समारोह के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक संबोधन

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

18 अप्रैल 2017 (दिन मंगलवार) (शेष....)

* एक पत्रकार ने सवाल किया कि आप के औरतों की इमामत करने के बारे में क्या विचार हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि इस्लाम में महिलाओं को विशेष दिनों में रियायत दी गई है। जैसे जब वे ऋतु अवस्था में हों या मातृत्व के समय आदि में और बाद में भी चालीस दिन होते है जिनमें उन्हें नमाज़ से छूट होती है। इसी तरह गर्भ अवस्था में वह रोज़ा नहीं रख सकतीं। तब उस स्थिति में यदि किसी महिला को आप इमाम निर्धारित कर देते हैं तो इसका मतलब होगा कि चालीस दिनों के लिए कोई इमाम नहीं होगा। हर महीने सात या आठ या छह दिनों के लिए कोई इमाम नहीं होगा। यह एक तार्किक बात है अन्यथा तो इस्लाम डिवीजन ऑफ लेबर की शिक्षा देता है। डिवीजन ऑफ लेबर यह है कि पुरुष को कुछ मामलों की ज़िम्मेदारी दी गई है और इसी तरह कुछ मामलों की ज़िम्मेदारी महिलाओं को दी गई है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इस्लाम महिलाओं से किसी स्थिति को छीन लेता है बल्कि महिलाओं को बहुत अधिक सम्मान देता है। इसीलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जन्नत माँ के क़दमों तले है। इसका मतलब यह है कि मां बच्चों का ख्याल रखती है माँ बच्चों की भलाई की तरफ प्रशिक्षण करती है ताकि वे देश के अच्छे नागरिक बनें और देश और समाज की अच्छी संपत्ति बनें। इस्लाम पत्नियों को जुदाई के लिए तलाक और खुला का अधिकार भी संतुलित रूप में देता है क्योंकि पुरुषों और महिलाओं की प्रकृति में अंतर है। उनकी शक्तियों में अंतर है इसलिए महिलाओं की बहुमत युद्ध क्षेत्र में नहीं उतरती। वह लड़ाई नहीं कर सकती। वे नर्म दिल होती हैं। इसलिए इस्लाम कहता है कि अगर युद्ध होता है तो केवल पुरुष इसमें भाग लें इस्लाम यह भी कहता है कि अगर एक पुरुष युद्ध के दौरान मारा जाता है तो वे शहीद का रुतबा पा लेता है। फिर एक महिला आपके पास आई जबकि आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अपने सहाबा के साथ पधारे थे उसने कहा हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कई ऐसे मामले जो केवल पुरुष करते हैं और हम नहीं कर सकतीं। और वह शहादत तक का रुतबा पा सकते हैं और यह सबसे बड़ी स्थिति है तो हम कैसे इस स्थान को पा सकते हैं। हम बच्चों का ख्याल रखता है, हम घरों का ख्याल रखती हैं हम अपने बच्चों की परवरिश करती हैं हम अपने पतियों के न होने पर में घरों में सारे कर्तव्यों को अंजाम देती हैं तो क्या हम भी इस स्थान को पा सकती हैं। आप ने फरमाया, निश्चय आपका स्थान बिल्कुल वही है। आप ने फरमाया कि अगर कोई व्यक्ति युद्ध के दौरान शहादत का जाम पीता है तो जो स्थान, वह पाता है वही स्थान आप घर में बच्चों की परवरिश करती हुई पाओगी क्योंकि तुम अपने बच्चों को राष्ट्र की अच्छी संपत्ति बना रही हो। इमामत तो बस एक बात है, इमामत सबसे बड़ी स्थिति नहीं है। इस्लाम तो इतनी अच्छी चीजें देता है। इमामत सबसे बड़ी स्थिति नहीं बल्कि इस्लाम तो कहता है कि इससे कई और बड़े रुतबे हैं। जैसे शहादत और संयमी बनना है। मुत्तकी सबसे बड़ी स्थिति है न कि इमामत। इमामत तो बड़ी मुश्किल बात है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार फरमाया कि अगर एक व्यक्ति इमामत कर रहा हो और उसे कोई बुरा विचार गुज़रे तो उस के लिए गुनाह लिखा जाएगा और सभी नमाज़ियों के गुनाहों का बोझ उस पर लादा जाएगा। तो यह कोई छोटी बात नहीं कोई तैयार नहीं होता किसी के गुनाह उठाने के लिए न मैं आप के और न मैं आप के गुनाह ले सकता हूं । मेरे अपने गुनाह इतने हैं कि अगर अल्लाह तआला मुझे माफ कर दो तो यही पर्याप्त है बजाय इसके कि आप के या किसी और के गुनाह उठाए जाएं।

* एक पत्रकार ने सवाल किया कि मस्जिदों को कभी-कभी हिंसक और आतंकवादियों को भर्ती करने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। इसे कैसे रोका जा सकता है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि इसीलिए ब्रिटेन और अन्य देशों के प्रेस बताता रहता हूं कि यह कर्तव्य तो सरकार का है कि अगर कहीं कुछ ग़लत हो रहा है तो सरकार और कानून चलाने वाली संस्थाओं का काम है कि इसे ठीक करें और सुधार करें। अत: अगर मस्जिदों में छोटे बच्चों का ब्रेन वॉश किया जा रहा है और रेडकलाईज़ किया जा रहा है और हिंसा की शिक्षा दी जा रही है तो सरकार का कर्तव्य है कि वह उस पर नज़र रखें बल्कि मैंने ख़ुद ऑफर की थी कि हमारे भी ख़ुत्बों को मॉनिटर किया जाना चाहिए। हमेशा यही कहता हूँ कि आप हमारी मस्जिद में आएं और हमारे ख़ुत्बा की निगरानी करें। जुम्अ: वाले दिन या किसी और समारोह पर भी जो हम करते हैं ताकि पता चले कि हम देश के कानूनों के अनुसार अपने आयोजन करते हैं और हम केवल धर्म की ही शिक्षा दे रहे हैं या नहीं। अगर हम घरेलू क़ानून के ख़िलाफ़ कुछ कर रहे हैं और हम समाज की शांति छीनने की कोशिश कर रहे हैं तो फिर हम सज़ा के हकदार हैं और हमें सज़ा मिलनी चाहिए। (इन्ट्रवियू का यह कार्यक्रम 11 बजकर 35 मिनट तक जारी रहा। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर पधारे जहां परिवारों से मुलाक़ात शुरू हुई।)

फैमली मुलाकात

आज सुबह इस सत्र में 50 परिवारों के 172 लोगों ने अपने प्यारे हुज़ूर के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाली यह परिवार और दोस्त जर्मनी की 34 विभिन्न जमाअतों से आए थे। कुछ परिवार जो दूर की जमाअतों से आए थे वे बड़ा लंबा और दूरी का सफर करके मुलाकात के लिए पहुंची थीं। स्टटगार्ट से आने वाले परिवार 210 किमी, हैं औवोर से आने वाली 350 किलोमीटर और बर्लिन से आने वाले परिवार और दोस्त 550 किलोमीटर का सफर तय करके पहुंचे थे। इन सभी ने अपने प्यारे हुज़ूर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने से प्यार से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। मुलाक़ातों के कार्यक्रम के बाद दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

जमाअत रोनहायम में मस्जिद का शिलान्यास

आज जमाअत रोनहायम में मस्जिद के शिलान्यास के समारोह का कार्यक्रम था। साढ़े पांच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने आवास से बाहर आए और शहर रोनहायम लिए प्रस्थान किया। बैयतुस्सबूह फ्रैनकफोर्ट इस शहर की दूरी तीस किलोमीटर है आज का दिन रोनहायम की जमाअत के दोस्तों के लिए असामान्य ख़ुशी और प्रसन्नता और बरकतों से भरपूर दिन था। उनके शहर में

ख़लीफतुल मसीह के मुबारक कदम पड़ रहे थे और उनके शहर की भूमि भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ के मुबारक वजूद से लाभांवित होने वाली थी। हर पुरुष और महिला जवान बूढ़ा छोटा बड़ा प्यारे आक़ा के आने का इंतज़ार कर रहा था। लगभग आधे घंटे के सफर के बाद छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ यहाँ तशरीफ़ लाए तो जमाअत के दोस्तों ने बेहद जोशीले तरीके में अपने प्यारे हुज़ूर का स्वागत किया। बच्चों और बच्चियों के ग्रुप ने स्वागत नज़में पेश कीं। पुरुष अपने हाथ हिलाते हुए अपने आक़ा का स्वागत कर रहे थे। और महिलाओं दर्शन के बरकत से फ़ैज़ पा रही थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा। इस अवसर पर सदर जमाअत रोनहायम नार्थ आदरणीय आताउल ग़फ़ूर साहिब और सदर जमाअत रोनहायम आदरणीय किफायतुल्लाह चीमा साहिब, मुबल्लिग़ सिलसिला मुहम्मद बिलाल ओवैस साहिब और क्षेत्रीय अमीर दाऊद अहमद क़मर साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत कहते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस अवसर पर रोनहायम शहर के मेयर Thomas Juhe साहिब ने भी हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

मस्जिद के शिलान्यास का समारोह

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मार्की में पधारे। जहां मस्जिद के शिलान्यास के संदर्भ में समारोह का कुरआन की तिलावत से आरम्भ हुआ जो हाफिज़ फ़ख़र अहमद साहिब ने की और इसका जर्मन अनुवाद कामरान वड़ैच साहिब ने पेश किया।

अमीर साहिब जर्मनी का सम्बोधन

बाद में आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब अमीर जमाअत जर्मनी ने अपना परिचयात्मक लैक्चर प्रस्तुत किया। अमीर साहिब ने सभी मेहमानों का स्वागत किया और कहा कि आज अहमदियों के लिए ख़ुशी का दिन है। अमीर साहिब ने उल्लेख किया कि काबा का निर्माण हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दोबारा किया थी। आप ने इस दौरान भी वही दुआ के शब्द पढ़े थे जिनका कुरआन करीम में इन आयतों में उल्लेख था जो कि आज अभी सुनाई गई हैं। मेरी भी यही दुआ है कि यह मस्जिद एक शांति की जगह बन जाए। अमीर साहिब ने शहर Raunheim परिचय करवाते हुए बताया कि इस शहर का स्थान एक बहुत ही उपयोगी जगह है। कुछ दूरी पर एयरपोर्ट स्थित है और फ्रैंकफर्ट के शहर भी निकट है। इस तरह एक बहुत ही सुन्दर पुल इस मस्जिद के साथ ही बना है। शहर की आबादी 16 हज़ार है और 105 देशों के लोग इस शहर में रहते हैं इतिहास से पता चलता है कि सात हज़ार साल पहले यह शहर आबाद हुआ था। जमाअत अहमदिया के इतिहास के संदर्भ में अमीर साहिब जर्मनी उल्लेख करते हुए बताया कि वर्ष 1987 ई में यहाँ अहमदी आकर आबाद हुए और यहां जमाअत की संख्या बढ़ी। अब यहाँ अहमदी 2 जमाअतों में विभाजित हैं। मस्जिद निर्माण के लिए पिछले साल यह ज़मीन जिसका क्षेत्रफल 2700 वर्ग मीटर है ख़रीदा गया। यहाँ जो मस्जिद निर्माण होगी उसके दो हॉल होंगे। एक निवास भी निर्माण होगा। इसके अतिरिक्त जमाअत के दफ्तर भी होंगे, एक बड़ा जमाअत का किचन भी होगा। इसके अतिरिक्त एक Multifunction हॉल भी बनाया जाएगा। यहां की जमाअत और उप संगठन मानव सेवा के कार्यों में आगे हैं। साल की शुरुआत में वकारे अमल द्वारा शहर की सफाई की जाती है। रक्त दान देने का कार्यक्रम होता है। वृक्षारोपण कार्यक्रम हैं, Charity Walk है। अमीर साहिब ने आख़िर पर शहर प्रशासन और मेयर साहिब का आभार व्यक्त किया।

रोनहायम के मेयर का सम्बोधन

अमीर साहिब सम्बोधन के बाद शहर रोनहायम के मेयर Mr. Thomas Juhe ने अपना लैक्चर प्रस्तुत करते हुए कहा: कि माननीय ख़लीफतुल मसीह ! मैं सब से पहले ख़लीफतुल मसीह का और सभी आने वालों का शुक्रिया अदा करता हूँ और मैं आप सभी को इस अवसर पर बधाई देता हूं। यह जमाअत अहमदिया के लिए बहुत ख़ुशी का मौका है और उतनी ही ख़ुशी शहर Raunheim की भी है। मेयर साहिब ने कहा 1987 ई में जमाअत के पहले सदस्य इस शहर में आबाद हुए। आपकी जमाअत शुरू से ही सक्रिय है और शहर के लिए बहुत उपयोगी है। शुरू से ही आप का यहां के प्रशासन से संपर्क और परिचय है। अहमदियों ने यहां हमेशा शांति और प्यार का संदेश फैलाया। आप लोग वास्तविक रंग में इस बात के हकदार हैं कि मस्जिद बनाएं। मेयर साहिब ने कहा कि शहर में विभिन्न देशों और विभिन्न धर्मों के लोग होते हैं जो अपनी अपनी परंपराओं और संस्कृति के साथ एक दूसरे के साथ मिलकर शांति के साथ रहते हैं। यहाँ शहर में जो सबसे शांति प्यार और मुहब्बत के साथ रह रहे हैं इसमें जमाअत अहमदिया भी हिस्सा है कि आप लोग यहां अमन का संदेश प्रस्तुत कर रहे हैं और अपने समाज को आगे बढ़ाने और विकास के लिए काम करते रहते हैं। अंत में मेयर साहिब ने कहा कि मेरी इच्छा है कि आपका मस्जिद निर्माण के यह प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक पूरा हो।

प्रांतीय सांसद का सम्बोधन

मेयर साहिब सम्बोधन के बाद प्रांतीय सांसद Mrs. Sabine Scholl साहिबा ने अपना लैक्चर प्रस्तुत करते हुए कहा: कि माननीय ख़लीफतुल मसीह ! सबसे पहले CDU पार्टी की तरफ से मस्जिद के शिलान्यास की बधाई देती हूँ और सभी मेहमानों की सेवा में सलाम अर्ज़ करती हूँ। जमाअत अहमदिया के स्पष्ट काम तो अब एक प्रकार की परंपरा बन गए हैं। उदाहरण के रूप में एक जनवरी को वकारे अमल और शहर की सफाई है। आप विभिन्न कार्यक्रम बनाते हैं जहां बातचीत होती है। महोदया ने कहा आज मेरे लिए यह एक सम्मान की बात है कि मुझे हुज़ूर अनवर का स्वागत करने का मौका मिल रहा है और सामने से परिचय का मौका मिल रहा है और हम हुज़ूर के साथ यह दिन मना रहे हैं। आज का दिन शहर Raunheim और विशेष रूप से सदस्यों के लिए एक बहुत ही महत्त्व और ख़ुशी का दिन है कि यहाँ एक ऐसी इमारत का गठन हो रहा है जो ख़ुदा तआला के लिए बनाई जा रही है। महोदया ने कहा Hessen प्रांत में जिस तरह धार्मिक स्वतंत्रता उपलब्ध है इस विषय में उन्हें बहुत गर्व महसूस होता है। जैसे जमाअत अहमदिया को ही यह मौका उपलब्ध है कि वे स्कूलों में इस्लाम की शिक्षा पढ़ा रहे हैं और जमाअत को एक विशेष स्थिति उपलब्ध है। महोदया ने कहा अहमदी लोग तो यहाँ बहुत अच्छे नागरिक बन चुके हैं और वह पिछले 30 साल से हमारे साथ मिलकर काम कर रहे हैं और शहर के विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। मस्जिद निर्माण पर अपनी नेक इच्छाएं व्यक्त करती हूं और चाहती हूं कि इस मस्जिद से भी शांति फैले और आप हमेशा शांति से काम करते चले जाएं।

संबोधन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

(इस के बाद 6 बज कर 27 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने संबोधन फ़रमाया) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद, तऊज़ और तसमिया के बाद फरमाया: सभी माननीय मेहमान । अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहो ! अल्लाह तआला आप सबको शांति और सुरक्षा में रखे। खासकर आजकल जो दुनिया के हालात हो रहे हैं इस में केवल धार्मिक संगठनों या जिस तरह कहा जाता है कि कुछ मुस्लिम चरमपंथी संगठनों से भय और खतरा नहीं है बल्कि अब दुनिया में जो नये Development हो रही है और देशों और सरकारों की आपस में जो दुश्मनियाँ बढ़ रही हैं उसकी वजह से बड़ा ख़तरा पैदा होता चाला जा रहा है कि यूरोप में भी और कोरिया के क्षेत्र में भी सुदूर पूर्व में भी अमेरिका में भी जंग छिड़ सकती है। इसके लिए हम सभी को शांति के लिए कोशिश भी करनी चाहिए और इसके लिए दुआ भी करनी चाहिए। इसीलिए मैंने आप सब को सबसे पहले शांति और सुरक्षा का संदेश दिया है कि हर व्यक्ति जो मानवता से प्रेम करने वाला है वह इस बात को समझे और शांति और सुरक्षा के प्रसार के लिए प्रयास करे।

राजनीतिज्ञ अपनी सरकारों को इस बात को मानने के लिए तय्यार करें कि युद्धों के बजाय शांति और प्रेम के प्रसार की हमें अधिक कोशिश करनी चाहिए। सुलह और शान्ति के प्रसार की हमें अधिक कोशिश करनी चाहिए।

इस्लाम का मतलब ही शांति और सुरक्षा है। दुर्भाग्य से कुछ ग्रुपों ने कुछ चरमपंथी संगठनों ने इस्लाम के नाम को बदनाम किया और मुस्लिम देशों में भी इस वजह से हत्याएं हो रही है। हकूमतों और जनता के बीच भी और चरम पंथी ग्रुपों के बीच भी युद्ध हो रहे हैं और इसी तरह कुछ चरमपंथी गुट कुछ पश्चिम देशों में भी ऐसी हरकतें कर रहे हैं। जर्मनी में भी कुछ घटनाएं हुई, फ्रांस में भी बेल्जियम में भी हुईं जिस के कारण ग़ैर मुस्लिम दुनिया में इस्लाम के विषय में ग़लत धारणा पैदा हो गई है और यही कारण है कि जो लोग इस्लाम की सही वास्तविकता से परिचित नहीं हो सकता है आप में भी कुछ ऐसे बैठे हो, वह यही समझते हैं कि इस्लाम एक चरमपंथ का धर्म है और

इस वजह से मस्जिद का निर्माण अगर हो रहा है तो आप लोगों में कुछ शंकाऐं पैदा होती हैं। लेकिन मुझे इस बात की ख़ुशी है कि यहां आने वाले वक्ताओं ने इस बात का इज़हार किया कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत के व्यक्तियों का यहाँ की Society में एक अच्छा प्रभाव है और अहमदी मुसलमान शांति, प्यार और भाईचारा फैलाने और इस Society में Integrate होने में अपना योगदान देते हैं। अत: यही वास्तविक इस्लाम है और मस्जिद बनने के बाद इसके नमूने अधिक उच्च रंग में पेश होंगे। जब मस्जिद यहाँ बन जाएगी तो तब पता लगेगा कि मस्जिद के मिनार से नफरतों के नारे नहीं लगते बल्कि प्यार और स्नेह की आवाजें आएंगी। प्यार और स्नेह के नारे उभरेंगें।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का कुरआन करीम की तिलावत में भी हवाला दिया गया है और हमारी अमीर साहिब ने भी उल्लेख किया है। उन्होंने भी जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के साथ काबा की बुनियादें ठीक कीं जिसके नमूना पर हमारी मस्जिदें स्थापित की जाती हैं ताकि एक ख़ुदा की इबादत करें और यह दुआ उन्होंने उस समय की थी कि इस जगह को शांतिपूर्वक जगह बना। अत: हमारे मस्जिदें यदि नमूना पर स्थापित हो रही हैं और होनी चाहिएं जिसे हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इस्माईल के साथ आधार बनाकर इस इमारत की नींव उठाई थीं तो हमारे मस्जिदों को भी शांति और सुरक्षा का स्थान होना चाहिए और यही उसका उद्देश्य है।

मेयर साहिब की भावनाओं का भी मैं शुक्रिया अदा करता हूँ। उन्होंने पड़ोसियों के अधिकार भी बात की कि अहमदी पड़ोसियों के हक़ अदा करने वाले हैं। आपस में संबंध बनाने वाले हैं। पड़ोसियों के अधिकार के बारे में इस्लाम में इस सीमा तक आदेश और ज़ोर है कि इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे बार बार पड़ोसियों के अधिकार की ओर ध्यान दिलाया है। एक समय मुझे लगता था कि शायद पड़ोसियों को विरासत के अधिकार में शामिल कर लिया जाए। बल्कि कुरआन में भी पड़ोसियों के अधिकार पर बड़ा विस्तार से उल्लेख है। अत: पड़ोसी का यह महत्व है और पड़ोसी के अधिकार का एक क्षेत्र है और यह विस्तार इस हद तक है कि न केवल यह कि अपने घर के साथ रहने वाले पड़ोसी हैं बल्कि आसपास के जितने भी घर हैं वह सब आप के पड़ोसी में आते हैं। आप के साथ सफर करने वाले आपके पड़ोसी में आते हैं। आपके साथ काम करने वाले अपने पड़ोसी में आते हैं और इस तरह यह दायरा होता चला जाता है। बल्कि एक जगह यह भी कहा कि तुम्हारी पड़ोसी 40 घरों तक है। अब अगर चारों ओर चालीस चालीस घर लें तो एक अहमदी के पड़ोस में 160 घर बन गए और इस तरह जब हर अहमद का घर इतना पड़ोस फैलता चला जाए तो मानो पूरा शहर ही उसका पड़ोसी हो गया और यही हाल इंशा अल्लाह हमारी मस्जिद का होगा। मस्जिद जब बनती है तो यहां भी मस्जिद में आने वालों का कर्तव्य है कि अपने पड़ोसियों के अधिकार का ख्याल रखना। मस्जिद उनके लिए किसी तंगी के कारण न बने बल्कि यहाँ के रहने वाले इस बात को व्यक्त करने वाले हों कि मस्जिद बनने से हमारी जो शंकाएं थीं कि कुछ यातायात की समस्याएं पैदा हो सकती हैं या कुछ कार्यक्रमों की वजह से हमारे लिए दिक्कतें पैदा हो सकती हैं वे सब ग़लत साबित हुईं और अहमदी मुसलमानों की यह मस्जिद से तो हमें लाभ ही लाभ हो रहा है और पहले से बढ़कर इस मस्जिद बनने के बाद अहमदी अपनी पड़ोसी का अधिकार देने वाले हैं।

इसी तरह कानून की पाबन्दी करने वाले हैं। कानून की पाबन्दी तो बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। अगर कोई मुसलमान देश के कानून का पाबन्द नहीं तो उसका कोई अधिकार नहीं है कि वह इस देश में रहे। कानून की पाबन्दी के विषय में और देश से प्रेम के विषय में तो इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने इस हद तक फरमाया है कि यह तुम्हारे ईमान का हिस्सा है। अत: देश के कानून बनाए जाते हैं वहाँ के रहने वालों को सुरक्षा देने के लिए। वहाँ के रहने वालों के लिए आसानियां बनाने के लिए। वहाँ के रहने वालों को ज़ुल्मों से बचाने के लिए। अत: जब इस्लाम की शिक्षा ही यही है कि तुम ने शांति और सुरक्षा फैलानी है और ज़ुलमों को दूर करना है तो यह कभी हो ही नहीं सकता कि कोई अहमदी मुसलमान या कोई वास्तविक मुसलमान कभी कानून का उल्लंघन करने वाला हो। हर वास्तविक मुसलमान हमेशा कानून का पाबन्द होगा और उसे रहना चाहिए और यदि नहीं तो उसका अपने धर्म इस्लाम भी कोई वास्ता नहीं। अत: तदनुसार अगर किसी के दिल में कोई शंका है तो उन्हें दूर करें कि इस्लामी शिक्षा इस बात की हरगिज़ अनुमति नहीं देती कि किसी प्रकार की अशांति फैलाई जाए या कानून हतोत्साहित किया जाए। अगर कुछ लोग इस्लाम के नाम पर अशांति पैदा करते हैं, कानून तोड़ते हैं वे इस्लाम को बदनाम करने वाले हैं। इस्लाम की शिक्षा हरगिज़ हरगिज़ इस बात की अनुमति नहीं देती।

इसी तरह एम.पी साहिबा का भी शुक्रिया अदा करता हूँ। उन्होंने भी बड़ी नेक भावनाओं को व्यक्त किया और धार्मिक स्वतंत्रता का भी उल्लेख किया। धार्मिक स्वतंत्रता के लिए जो इस देश में हमें मिल रही है हम उनके अर्थात यहाँ के लोगों और सरकार के बहुत आभारी हैं और यह धार्मिक स्वतंत्रता ही है कि यहां की अधिकांश ग़ैर मुस्लिम होने के बावजूद, ईसाई या अन्य धर्म वाला होने के बावजूद मुसलमानों को जो इस क्षेत्र में काफी मामूली संख्या में हैं मस्जिद की अनुमति दे रहे हैं और इसके लिए यहां के लोगों का, पड़ोसियों के और परिषद का भी शुक्रिया अदा करता हूं कि उन्होंने हमें यहाँ मस्जिद बनाने की अनुमति दी और इंशा अल्लाह जब यह मस्जिद बन जाएगी तो उन्हें अधिक स्पष्ट अनुभव होगा कि मस्जिद की अनुमति देकर उन्होंने एक अच्छा पड़ोसी का अधिकार अदा करने वालों को उनका हक दिया है। तब उस लिहाज़ से भी आप लोगों का आभारी हूँ कि यहाँ धार्मिक स्वतंत्रता की वजह से हम स्वतंत्र रूप से अपनी इबादतें अदा कर सकते हैं और बाकी जो हमारे कार्यक्रम हैं उन्हें अदा कर सकते हैं और वास्तव में यही वह बात है जो धार्मिक स्वतंत्रता और शांति और सुरक्षा का आधार है।

हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला ने सभी क़ौमों में नबी भेजे। सभी क़ौमों के सुधार के लिए अपने विशेष चुने हुए बन्दों को भेजा जिन्होंने उन्हें मज़हब और धर्म सिखाया और उन्हें नैतिकता सिखाई। अत: हर धर्म जो है वह ख़ुदा तआला की तरफ से है और जब से दुनिया बनी है अब तक हर क़ौम में अल्लाह तआला की तरफ से भेजे हुए जो नबी आए हम उन्हें मानते हैं कि वे सब सच्चे थे और अल्लाह तआला की तरफ से भेजे हुए थे और अल्लाह तआला की शिक्षा के प्रसार के लिए आए थे। इस लिहाज़ से हम कभी सोच भी नहीं सकते कि किसी दूसरे धर्म के अधिकार को हम छीनने वाले हों या उन्हें किसी भी तरह नुकसान पहुंचाने वाले हैं बल्कि इस्लाम में जब एक लंबे परसीकोशन के बाद इस्लाम धर्म के संस्थापक (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को युद्ध की अनुमति दी गई तब इस शर्त के साथ दी गई और कुरआन शरीफ में इसका उल्लेख है कि यह जो लोग आप तुम लोगों को नष्ट करना चाहते हैं यह वास्तव में धर्म को नष्ट करना चाहते हैं और धर्म को नष्ट करने वाले जो हैं चाहिए कि उनके हाथों को रोका जाए क्योंकि अगर इसी तरह उन्हें युद्ध और हथियारों से जवाब देकर उनके हाथों को न रोका गया तो दुनिया में कोई चर्च बाकी नहीं रहेगा, कोई सैनेगाग बाक़ी रहेगी है, न कोई मंदिर बाकी नहीं रहेगा और कोई मस्जिद बाकी नहीं रहेगी क्योंकि ये लोग धर्म के ख़िलाफ हैं। अत: इस्लाम ने कुरआन ने यहां इस बात को कायम किया कि धार्मिक स्वतंत्रता इस्लाम की बुनियादी शिक्षा का हिस्सा है और इस मामले में आप लोगों को बधाई भी देता हूँ कि इन देशों में आप लोगों को इस बात का अधिक एहसास है इस बात की तुलना में कुछ इन देशों के जो मुस्लिम देश हैं कि वे धार्मिक स्वतंत्रता दें। आप लोगों ने धार्मिक स्वतंत्रता दी और इसी धार्मिक स्वतंत्रता की वजह से ही अहमदी जिन्हें पाकिस्तान में धार्मिक स्वतंत्रता से वंचित किया गया था यहाँ आकर आबाद हुए और यहां आकर अपनी इबादत और अन्य कार्यक्रम स्वतंत्रता से कर रहे हैं और इसी स्वतंत्रता की वजह से अपनी मस्जिदें भी निर्माण कर रहे हैं। इसके लिए भी आप लोगों का बहुत आभारी हूँ।

लोकतंत्र की यहाँ बात हुई। वास्तविक लोकतंत्र की वजह से ही आप लोगों में धार्मिक स्वतंत्रता का भी एहसास पैदा हुआ और इस्लाम भी यही कहता है कि लोकतांत्रिक स्वतंत्रत होनी चाहिए बल्कि कुरआन ने कहा कि जब तुम अपने नेता चुने करो, जब तुम अपने सरदार चुना करो और अपनी सरकार के कर्मचारी और अधिकारी चयन करो तो ऐसे लोगों का चयन करो जो अमानत का हक़ अदा करने वाले हों। ऐसे राजनेता सरकार में आएं जो अमानत का हक़ अदा करने वाले हों और अमानत का अधिकार है कि जनता की बेहतरी के लिए काम करने वाले हों और देश की भलाई के लिए काम करने वाले हों तो इस्लाम तो इस हद तक शिक्षा देता है कि अपनी स्वतंत्रता के राय के अधिकार को भी उपयोग करो। किसी पार्टी की

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45-2017-2019- Vol. 2 Thursday 7 Septembr 2017 Issue No. 36

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

Affiliation नहीं है बल्कि इस बात को ध्यान में रखें कि ऐसे लोग चुने जाएं, ऐसे लोग सरकार में आएं जो जनता की बेहतरी का हक़ अदा करने वाले भी हैं, उसके लिए काम करने वाले हों और देश के विकास के लिए भी उपयोगी हों और उसका हक़ अदा करने वाले हों। तब इस शिक्षा के साथ हम अपनी बातों को दुनिया में फैलाते भी हैं और शिक्षा का पालन करते हुए हम अपने जीवन जीने की कोशिश भी करते हैं और यही एक अहमदी काम है कि जहां वह धार्मिक स्वतंत्रता की वजह से आप लोगों के आभारी बनें। वहाँ कानून का इस हद तक पाबन्द हों कि एक नमूना बन जाएं और इसी तरह ऐसे लोगों को ऐसे नेताओं को चुनने वाले हैं जो देश तथा क़ौम के लिए बेहतरीन सेवक भी हों।

मुझे उम्मीद है कि इंशा अल्लाह जब यह मस्जिद निर्माण हो जाएगी तो यहां के रहने वाले अहमदी अपने कार्यक्रम एक जगह इकट्ठे होकर अधिक सुविधा से कर सकेंगे। जहां वह इबादत करेंगे वहाँ अन्य कार्यक्रम भी कर सकेंगे अपने देश और राष्ट्रीय विकास के लिए भी अच्छा योगदान करने वाले होंगे। अल्लाह तआला उन्हें ताकत भी दे और ख़ुदा करे कि जब यह मस्जिद बन जाए तो जो उम्मीदें अहमदियों से की जा सकती हैं और की जानी चाहिए और जो उनसे उम्मीद हैं इंशा अल्लाह वे उन को पूरा करने वाले होंगे और इस्लाम की वास्तविक और सुन्दर शिक्षा से इस क्षेत्र के लोगों में अधिक परिचय करवाने वाले होंगे। अल्लाह तआला करे कि ऐसा ही हो। धन्यवाद।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 6 बज कर 46 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ नींव रखने की जगह पर पधारे और दुआओं के साथ बुनियादी ईंट स्थापित फ़रमाई। इसके बाद हज़रत बेगम साहिबा ने दूसरी ईंट स्थापित फ़रमाई। इसके बाद निम्नलिखित जमाअत के उहदेदारों और मेहमानों को एक ईंट रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब (अमीर जमाअत जर्मनी), मेयर शहर राऊनहायम, श्री थॉमस जोहे साहिब, प्रांतीय सांसद Mrs. Sabine Bachle- Schols साहिबा, अब्दुल माजिद ताहिर (अतिरिक्त वकीलुत्तबशीर लंदन), आदरणीय हैदर अली जफर साहिब (मुबल्लिग़ इन्चार्ज जर्मनी), आदरणीय मुनीर अहमद जावेद साहिब (प्राइवेट सचिव), आदरणीय मुहम्मद बिलाल ओवैस साहिब (क्षेत्रीय मुरब्बी सिलसिला), आदरणीय चौधरी इफ्तिख़ार अहमद साहिब (सदर मजलिस अंसारुल्लाह जर्मनी), आदरणीय हसुनात अहमद साहिब (सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी), आदरणीया अतयतुन्नूर हयूश अहमद साहिबा (सदर लजना इमाइल्लाह जर्मनी), आदरणीय इरफान अहमद साहिब (राष्ट्रीय आंतरिक परीक्षक), आदरणीय दाऊद अहमद क़मर साहिब (क्षेत्रीय अमीर),आदरणीय किफायतुल्लाह चीमा साहिब (सदर जमाअत रऊन हायम साऊथ), आदरणीय अताउल ग़फूर साहिब (सदर जमाअत राऊन हायम नार्थ), आदरणीय अमानुल्लाह साहिब (महासचिव राऊन हायम साउथ), आदरणीय शाहिद अहमद साहिब (सचिव उद्योग तथा तिजारत राऊना हायम नार्थ), आदरणीय नईम अहमद साहिब (ज़ईम अंसारुल्लाह राऊना हायम साउथ), आदरणीय राजा ज़फ़रुल्लाह ख़ान (ज़ईम अंसारुल्लाह राऊन हायम नार्थ), आदरणीय शिराज़ अहमद ख़ान (कायद ख़ुद्दामुल अहमदिया राऊन हायम साउथ), आदरणीय यासिर जावेद साहिब (कायद ख़ुद्दामुल अहमदिया राऊना हायम नार्थ), आदरणीया फरहत नाहीद चीमा साहिबा (सदर लजना राऊन हायम साउथ), आदरणीया नाज़िया ख़ान साहिबा (सदर लजना राऊन हायम नार्थ), आदरणीय कामरान अरशद साहिब। इसके अतिरिक्त वाकफह नौ प्रिया दानिया अहमद (राऊना हायम साउथ), प्रिया अमतुस्सबूह बट वाकफा नौ (राऊन हायम नार्थ), प्रिय दानिश मुहम्मद अहमद (वक्फे नौ रैना राऊन हायम साउथ) और प्रिय जाज़िब अहमद ख़ान (वक्फे नौ राऊन हायम नार्थ) ने भी एक ईंट रखने का सौभाग्य पाया। अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने दुआ करवाई।

दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ मार्की में पधारे जहां इस समारोह में शामिल होने वाले सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ खाना खाया। इस दौरान मेहमान हुज़ूर अनवर से मिलने के लिए आते रहे। हुज़ूर अनवर प्यार से मेहमानों से गफ़्तगू फरमाते रहे, मेहमान हाथ मिलते रहे। बाद में हुज़ूर अनवर मार्की से बाहर पधारे। बाहर बच्चे एक लाईन में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने प्यार से उन बच्चों को चॉकलेट दी। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लजना की मार्की में पधारे जहाँ औरतों ने शरफ़ ज़ियारत की और बच्चियों ने दुआ नज़में और तराने पेश किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने प्यार से बच्चियों को चॉकलेट दीं। बाद में 7 बज कर 55 मिनट पर यहां से बैयतुस्सबूह फ्रैंकफर्ट के लिए प्रस्थान किया। लगभग 25 मिनट सफर के बाद 8 बज कर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ बैयतुस्सबूह में पहुंचे।

आमीन का समारोह

8 बज कर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद हॉल में पधारे और कार्यक्रम के अनुसार आमीन का समारोह शुरू हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्न 30 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई। प्रिय अकराश फराश, राय फहद अहमद, मुहम्मद लबीबुर्रहमान खोखर, ज़ोरीज़ अव्वाब नासिर, आरिज़ कैसर बट, ग़ालिब अहमद शम्स, मिर्ज़ा सारमुद्दीन बाज़द अहमद, इरफान काहलों मुस्तफा, आलियान अहमद, ज़ाहर अहमद फूज़ान अहमद इब्राहिम अफज़ल, राहील अहमद, आयान अहमद ताहिर, अब्दुल्लाह अशरफ मैमन, अमान अहमद कुरैशी, हन्नान अहमद ज़फर, अमाद रियाज़, अरीब अहमद।

प्रिया अफरह नूर समी, हानिया अहमद, मलाईका वड़ैच, अबीहा अहमद, ईशा मलिक, माहा खुर्रम, जोरीरह हलीम, आयशा घुंमन, बारिअ वसीम , शानिया अहमद, नबीला अहमद।

आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad